نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

افضل الذکر لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

आईना ए- मारुफ

खाक पाए पिर फहेमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारुक शाह
कादरी अल चिश्ती इफतेखारी मारुफ पिर

نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

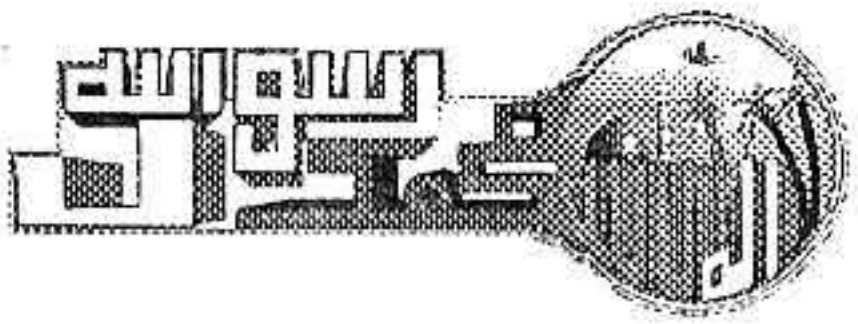

आइना-ए-मारुफ

खाकपाए पीर फैहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारुक शाह
कादरी अलचिश्ती इफ्तेखारी मारुफ पीर अफी अन्हो

पता

भगत सिंह नगर नं. 1, लिंक रोड,
गोरेगांव (वे), मुंबई नं. 104.
फोन : 24587110

تاج العارفین حضرت خواجہ شیخ محمد عبدالرؤف
شاہ قادری الچشتی افتخاری فہمی پیر مدظلہ العالی

Khwaja Shaikh Md. Abdul Rauf Shah Quadri Al Chishti
Iftekari Fehmi Peer M.A

मिनजुमला हुकूक बहक्के मुसन्निफ महफूज है

अरकान

नाम किताब : आईन-ए-मारुफ

मुसन्निफ

ख्वाजा शेख मुहम्मद फारुक शाह कादरी
उलचिश्ती इफ्तेखारी मारुफ पीर

नवईयत अशाअत : बारे अव्वल

तादादे अशाअत : ५००/-

मकामे अशाअत :

मालवणी शरीफ, बमौक़ा जश्ने ग़ौसुलआज़ज़म व जश्ने पीर आदिल (र.अ.)

तारीखे अशाअत :

१० अक्टूबर २००४ बमुताबिक २४ शाबानुल मुअज्ज़म १४२५ हिजरी

कम्प्युटर कम्पोजिंग

9821463154/20614731

PMC, 422, Gate No. 7, Near Bus Stop,
Malwani, Malad (W), Mumbai-95

इंतेसाब

मैं अपना दीवान आईना-ए-मारुफ
अपने पीरो मुर्शिद ताजुलआरिफीन हज़रत ख़्वाजा शेख़
मोहम्मद अब्दुल रऊफ शाह क़ादरी चिश्ती इफ्तेख़ारी
पीर फ़ैहमी मदज़िल्लाहुल आली की बारगाहे विलायत में
नज़र करता हूँ जिनके इश्को मुहब्बत में
सरशार होकर मजमुआए कलाम वजूद में आया

गर कबूल इफ्तेदस है अज़ो शरफ
ख़ाकपाए पीर फ़ैहमी ख़्वाज शेख मोहम्मद फारुक़
शाह क़ादरी उलचिश्ती इफ्तेख़ारी मारुफ पीर अफ़ी अन्हो

सदक़े फ़ैज़ो करम के

बरुहे कलमा पढ़ा दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

अकड़ना है ये सिफाते मुरदा
क्यों ज़िदा हो के अकड़ रहा है

तेरी तलब में ये उम्र गुज़रे
ख़याले जानां में जां भी निकले

तलाशे रब में भटक रहे हैं
जगह जगह पर वह कट रहे हैं

तेरा तसव्वुर रहे सलामत
ज़माना चाहे करे मलामत

तहक़ीक कलमा करा दिया है
तस्दीक़ कलमा करा दिया है

जो थामे पीर आदिल का दामन
होगा वही पीर फैहमी सा रोशन

वह राज़े कलमा बता दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

राहे निजात दिखा दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

चश्में करम की हवा दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

शुक्रे ख़ुदा है मिला दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

शराबे वसलत पिला दिया है
मैं तेरे फ़ैज़ो करम के सदक़े

ला में इलाहा दिखा दिया है
मैं तेरे फैज़ो करम के सदक़े

उन्हीं पे सब कुछ लुटा दिया है
मैं तेरे फैज़ व करम के सदक़े

पीर का मुख़ड़ा

पीर मुखड़ा तेरा सुहाना है
गन्जे मख़्फी का तू ख़जाना है

कोई नादान तुझको क्या जाने
जिसने जाना वह मरदे दाना है

जिनको आदत पड़ी भटकने की
इस दरपे जो आया सियाना है
लाख गर तुम इबादत करते रहे
रब न जाना वह अनजाना है
दर बदर न फिरो तुम रब के लिए
आ दरे पीर यहां वह खज़ाना है
कलमा ईमान हैं कहे पीर आदिल
ज़िया कलमा न पाया कब दाना है

पीर फ़ैहमी ने हमको बतलाया
ढूँढ निकाला यह वह ख़ज़ाना है

पीर आदिल

तेरे फ़ैज़ो करम से पीर आदिल पाई ज़िया नैनों में
साँसों में बसाया कलमे को और आई बीना नैनों में

दर दर भटकता फिरता रहा न खुद का पता न खुदा पाया
तेरे दर पर जो आया पाया है मेरा खुदा नैनों में

न दैरो हरम को जाओ तुम न दर दर ठोकर खाओ तुम
आओ नैन मिलाओ मुशिर्द से वह खुद ही मिलेगा नैनों में

समझा न अपने दम को कभी फिर इल्मे जहाँ का दावा क्यों
ऐ न समझ बस इतना समझ है किसकी ज़िया नैनों में

पीर आदिल मेरे साक़ी भर भर के पिलाये जाम ऐसे
अब सर में नशा है दिल में नशा फ़ैहमी का नशा नैनों में

नज़ारह

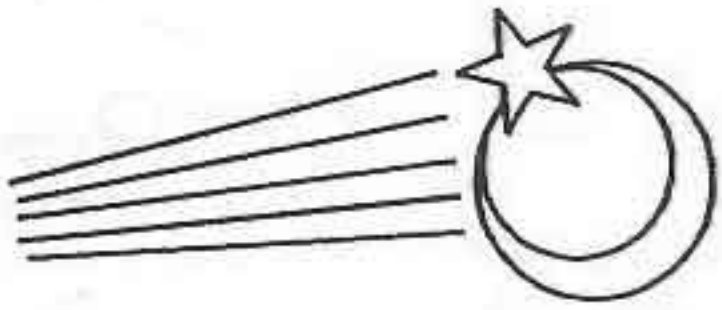

हो गया मुझको नज़ारह हर पल मेरे यार का
आगया दिल में उजाला रब तेरे दीदार का

ख़ुद्दारी और खुदी अपनी मिटा करके तू सुन
आ रहा है हर घड़ी पैग़ाम तेरे यार का

मैं मिटा अपनी ख़ुदी से तब नज़र आये तुझे
वरना हर जा पर परेशां और तू दिल गीर का

मैंने माना हर घड़ी तू याद करता है उसे
लेकिन कुछ समझा नहीं हक़ क्या है हक़दार का

हर कोई याद करता है तुझे हर घड़ी
तारे दम से नाम लेता हूँ मैं अपने यार का

पीर आदिल से हमको जब मिला कलमे का राज़
हो गये हक़दार हम भी जलवए दिलदार का

हो मुबारक पीर फ़ैहमी ये नज़ारए जमाल
ज़ाहिदा तुझको मुबारक हो तसव्वुर हूर का

मिल
कर तो देख

किसी पीरे कामिल से मिलकर तो देखो
अपने दम में कलमा बसा कर तो देखो
होगी इबादत हर लम्हा लम्हा
तसव्वुर में मुर्शिद सजा कर तो देखो
नहीं दूर रहता मअबूद अपना
ज़रा खुद में ग़ोता लगाकर कर तो देखो
अपने वजूद में मौला मिलेगा
वजूद में मीम मिला कर तो देखो
दर दर न तुमको भटकना पड़ेगा
दरे यार पे सर झुकाकर कर तो देखो
करम से पीर आदिल के बनी बात अपनी
उन्हें अपने दिल में बिठाकर तो देखो
मुक़द्दर बनाये पीर फैहमी दकन में
बीजापुर शहर तुम जाकर तो देखा

बफ़ज़ले पीरे मुग़ां

बफ़ज़ले मेरे पीरे मुग़ां हुए हम ताजदारों में
थे काँटों में उलझे हुए अब है चमनदारों में

न खुदी मिटी न खुदा मिला न किसी से तेरा पता मिला
दरपे तेरे आए जो हुए हम भी दिलदारों में

दैरो हरम में भटके हुए अन्ता अना में थे उल्झे
पिया हाथों से तेरे प्याला जो हुए अब दीनदारों में

नहनो अक़रब कहके छुपा ढूँढू मैं तुझे कहाँ खुदा
मिला पीरे मुग़ां का हमको दर हुए जब दीदारों में

सूरत तेरी प्यारी प्यारी मेरे नैनों में बस गयी
तेरा मुखड़ा देख के शैदा हुए अब हम भी तलबगारों में

पीर आदिल का कहना है ये रहबरी से तुम पाओगे खुदा
न माने जो मेरी बातों को वह भटक गया गुमराहों में

फैहमी पिया तेरे नक्शे क़दम जो चला वह ताजदार हुआ
जो उससे मुकर जाते हैं सर उन का पुरख़ारों में

नैनन में

जब परदा उठाई दूई का वहदत को पाई नैनन में
हर शै में जलवा दिखने लगा ऐसा नक्शा जमाई नैनन में

न देर में तेरा निशां मिला न काबे से कुछ पता चला
जब अहले नज़र से नज़रे मिलीं सब राज़ को पाई नैनन में

गर खुद से खुद को मिलना है और राज़े खुदी का पाना है
तू तारे नफस को ज़ीना बना हर शै दिखेगी नैनन में

तू अपनी खुदी को पहले मिटा आइनए दिल को अपने सजा
के दीद का तू भी पा ले मज़ा रअयतो रब्बी नैनन में

ये नुस्खा मुजर्रिब है मेरा हर शय में नजर आयेगा खुदा
तू खाक पाकपा का सुर्मा बना फिर पाये बिनाई नैनन में

पीर आदिल सा देखा न कोई है रहबर मेरे पीरे कामिल
मुझे अपने दम का कलमा दिया और सैर कराई नैनन में

पीर फ़ैहमी हैं शैदाई तेरा सर अपना हर दम झुकाया है
जब से हुआ तेरा फ़ैज़ो करम और पाई रसाई नैनन में

बहुत देखे तुमने आमिलो रहबर
मेरे पीर आदिल का मुशाबा नहीं है

इल्मो अमल में यकता हुए आलिम
मगर राज़े मख़्फी पाया नहीं है

ये ज़हदो तक़्वा ये ज़ाहिदे नादां
ता उम्र गुज़ारी मौला पाया नहीं है

नज़र से नज़र को मिलाकर पिलाया
वह नशा तेरे सर में आया नहीं है

एक नज़रे करम से कामिल की मुझको
खुद में पाया मौला सिवाया नहीं है

ज़ातो सिफ़ात में लाशरीक है तेरा
सिवा पीर आदिल के समाया नहीं है

कहना पीर फहैमी हमेशा तुम्हारा
बग़ैर पीर मुर्शिद के चारा नहीं है

दो अलिफ

क्या ख़ूब मौला का ये लामका बना है
रहता है जिस मकां में दो अलिफ से बना है

क्या जाने कोई नादां हिकमत है क्या मकां की
दो खिड़कियों से हर दम जो झांकता ख़ुदा है

हैं सात इसकी खिड़की और सात दरवाज़े
सब कुछ मकां के अंदर पर छत ही लपता है

न समझो ख़ाको आतिश आबो हवा इसको
ये ख़ास घर है उसका बस नूर से बना है

गंजे ख़फी से आया अहमद का है वह साया
आदम के दम में आके आदम वह बना है

कहते है जिसको आदम वह है कबर ख़ुदा की
मुरदे में आके ज़िंदा ये कैसे छुप गया है

जब पहुँचा लामका में आदिल पिया को पाया
तकमीले बंदगी है मेराजे इन्तिहा है

जो जाना इस मकां को कहलाए पीर फ़ैहमी
ये सब जहां बनाकर फिर ये मकां बना है

★★★

मनाना चाहिये

रुह में कलमा बसाना चाहिये
यार का दिल में ठिकाना चाहिये

तारे दम उसका ठिकाना है ज़रुर
जान पहचान के जाना चाहिये

हर घड़ी मिलने का उसका ही नशा
ये नशा सर ले के जाना चाहिये

नहनो अक़रब कह के वह दाख़िल हुआ
बस गया साँसों में पाना चाहिये

आदम नगर से आये हैं हम सभी
अहमद नगर को अब जाना चाहिये

उनके सदके में मिला रब्बुलउला
पीर आदिल को मनाना चाहिये

पीर फैहमी भी कहे हैं हर घड़ी
मान जायेगा मनाना चाहिये

रुहे ईमां

जिसके भी दम में अगर कलमए रहमां होगा
सूरते इंसां मगर पैकरे यज़्दां होगा

गर न अपने कोई दम को जाना होगा
सूरते इन्सां मगर सीरते हैवां होगा

पहले रहबर से किसी पीर कामिल से मिलो
जब मिले कामिल हक़ तुझपे मेहेरबां होगा

तू अगर लाख समझ अपने को दाना बीना
जो नहीं जाना हक़ वह क्या शनासा होगा

आपकी नज़रे करम से मिला खुद का पता
इससे बढ़कर कोई मुझपे क्या एहसां होगा

पीर आदिल से मिला राज ये गंजे मख़फी
जाना जो राज को दिल उसका गुलिस्तां होगा

हो गया फ़ैहमी पीर आपसे दाना बीना
जाने जानां मेरा रुहे ईमां होगा

हक़ीक़त है क्या

देख ले खुद में है पनहां तेरा खुदा हैरत है क्या
गर मिले तुझसे जुदा तेरी भला इज़्ज़त है क्या
गंजे मख़्फी में मुजस्सम नूर था मेरा खुदा
हो गई पुतली दरख्शाँ नूरे वहदत है क्या
नहनो अक़रब से मिला जब तेरे होने का पता
ढूँढ निकाला खुद में पिनहा मेरा खुदा हैरत है क्या
वहदतो कसरत में आई एक ही सूरत नज़र
उठ गया परदा दूई का चादरे ग़फलत है क्या
दिल स्याह और लब पे लेता नाम रुख़े रोशन का तू
कैसे तुझपे हो अयां हक़ की बता सूरत है क्या
पीर आदिल मेरा काबा हर तरफ जलवह नुमा
आ गया मुझको नज़र ये मेरी किस्मत है क्या
हां वही है पीर फैहमी कहते हैं जो हर घड़ी
मैं नहीं हूं मैं नहीं हूं अब मेरी हक़ीक़त है क्या

कहां देखते हैं

ख़ुदा को वह नादां कहां देखते हैं
बने वह ग़ाफिल वहाँ देखते हैं

पीरे मुग़ां से मिला राज़े वहदत
जो हैं दीवाने हर जां देखते हैं

हुआ जिनको हासिल दीदार रब का
दो आलम में ख़ुशियां नेहां देखते हैं

वही जलवा फरमां हैं दैरो हरम में
हर गुलज़ारो गुन्चे में अयां देखते हैं

दीदारे रब का क़यामत में हक़ है
हैं रब के दीवाने यहां देखते हैं

छुपा देखा पुतलिए तारे नफस में
हर शै में तुझको नेहां देखते हैं

किया ख़ुद को फ़ानी हुआ तू ही बाक़ी
अपने मकां में लामकाँ देखते हैं

मेरे पीर आदिल रगे जां बसे हैं
नहीं वह छुपे बस अयां देखते हैं

जिस दिन मिले पीर फ़ैहमी सनम से
नहीं दो सिरा में दोसरा देखते हैं

वजूदे ला मकां

इस ला मकां वजूद में तेरा खुदा नहीं
मौजूद इस मकान में तू देखता नहीं

है यार वही जलवा गर तेरे लिबास में
तू देखता है ग़ैर उसे देखता नहीं
जिसको जुदा समझता है अपने से दूर तू
खुद में खुदा तू देख ले खुद से जुदा नहीं
ज़ंगे खुदी से पहले कर दिल को सफा अपने
वह आईने में तेरे हैं तुझसे जुदा नहीं
दैरो हरम में ढूंढता है रात और दिन
मौजूद खुद वह हममें है तू आशना नहीं
मैं जिसमों जां में ढूंढा उसे उम्र कट गयी
हक़ ही को खुद में पाया कोई दूसरा नहीं
गर चाहता है उसका पता मिल किसी कामिल फकीर से
एक आन में मिला दे वह तुझसे जुदा नहीं
खुद का पता मिला मुझे आदिल पीर से
दरिया से क़तरा क़तरे से दरिया जुदा नहीं

मुद्दत से न मिला फैहमी पीर के सिवा
मैं को किया फना क्या तू ही बक़ा नहीं

तसव्वुर में मुर्शिद

तसव्वुर में मुर्शिद बसाये हुए हैं
उसी आईना में रब पाये हुए हैं
मेरी पारसाही का राज़ यही है
शराबन तहूरा पिलाए हुए हैं
पढ़ा कलमा हमने बरुहे ज़बां से
यही ज़िक्र अफ़ज़ल सुनाए हुए हैं
हर एक शै में जलवा देखा तुम्हारा
हम वहदत में कसरत को पाये हुए हैं
ये गंजे ख़फी का भेद है सारा
मेरे आक़ा मुझको बताए हुए हैं
मजाल क्या है हम को इज़ादे नकीरैन
हम हुब्बे नबीं में नहाए हुए हैं
मेरे पीर आदिल सदके तुम्हारे
जहन्नम से हमको छुड़ाए हुए हैं
कहें पीर फ़हमी सुनो आशिको तुम
हम इश्के नबी दिल में बसाये हुए हैं

पीर फ़हमी की नवाज़िश का अंदाज़ देखिये
मारुफ बनकर जहाँ में हैं चमकने वाले

पीर फ़हमी

बिस्मिल्लाह शरीफ

है कुर्आन का सर बिस्मिल्लाह
आरिफ़ों का है ज़र बिस्मिल्लाह
अना नुक़्ता बा है क़ौले अली
कर लो ग़ौरो फिक्र बिस्मिल्लाह

ख़ैरो बरकत भी है रहमत भी
पढ़ो शामो सहर बिस्मिल्लाह
इसमें ज़ातो सिफ़ात है मख़्फी
एक नुक़्ते का घर है बिस्मिल्लाह

मन अरफ से तू जान ले उसको
कुन्तो कन्ज़न का दर बिस्मिल्लाह
अैन तूफान में पुकारा है जब
आए बनकर खिज़्र बिस्मिल्लाह

राज़े कुन का भी कुन है पीर फैहमी
ले लो उनसे नज़र बिस्मिल्लाह
बे के नुक़्ते का नुक़्ता जान मारुफ
तन में है किधर बिस्मिल्लाह

अल्लाह हू

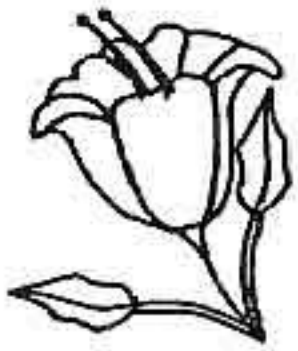

देखता हूं तुझे हू बहू
अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

क्यूँ करुं गैर की जुसतुजू
यार है मेरा अब रुबरु

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

पढ़ रहा हूं नमाज़े फ़ना
करके खूने जिगर से वजू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

क्यों न जिन्नो मलाइक कहें
बोल उठा मेरा भी लहू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

याद क़ालू बला आ गया
मैं था और तू रुबरु

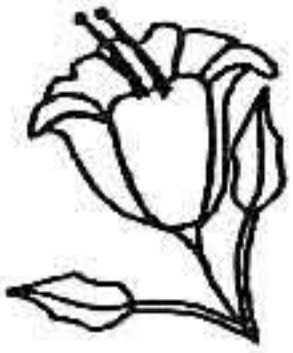

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

तू ही इंसान में तू ही कुर्आन में
तेरा जलवा ही है चार सू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

देखता हूँ जिधर आ रहा है नज़र
तू ही तू तू ही तू तू ही तू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

पीर फहमी तेरे हम क़ाएल हुए
ज़िक्र दम में बसाया हू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

मारुफ जान के राज़े हू
दम बदम कह रहा है हू

अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू

हमदे बारी तआला

सुन ले मेरी सदायें ओ लामकान वाले
रहमत में अपनी लेले नाज़िल कुर्आन वाले

ग़फलत में पढ़ें हैं बुझते हुए दिए हैं
फ़ानी हो रहे वहमो गुमान वाल

रंजो अलम ने घेरा है बर्बादियों का पहरा
बस तेरा है सहारा शहे रग की जान वाले

इल्मे लुद्दनी से तू सीने को कर दे रौशन
दाता तू सख़ी है कलमे की शान वाले

मुरदा दिलों को यारब कलमे से कर दे ज़िंदा
रुह की ज़बां से बोले विर्दे जुबा वाले

फैहमी पीर तुमने कलमा दिया है ऐसा
पाते ही बन गये हम मोमिन की शान वाले

करम ऐसा करदे झोली को मेरी भर दे
मारुफ गुलाम तुम्हारा ऐ आन बान वाले

मुबारक बाशद

आमदे अहमदे मुख़्तार मुबारक बाशद
घर तेरे आमना अनवार मुबारक बाशद

एक मैं क्या सभी चाके गिरेबां होंगे
देखकर आपका रुख़सार मुबारक बाशद

तुम हो मुख़तारे जहां चाहो बनाओ मसकन
दिले के शीशे में हो सरकार मुबारक बाशद

बुलबुले नग़्मा सरां हो गयी शौक़े लक़ा
सरबा सजदह हुए अश्जार मुबारक बाशद

सर झुकाए हुए मेहराबे रज़ा में अपना
चश्मए अबरुए ख़मदार मुबारक बाशद

अपने महबूब पर सल्ले अला शामो सहर
कह रहा है खुदा हर बार मुबारक बाशद

बाइसे दीद है कुन का फसाना तेरा
दीद बाज़ों को हो दीदार मुबारक बाशद

☆☆☆

वाइज़ों नारे जहन्नम से डराते क्यों हो
शाफए अहमदे सरकार मुबारक बाशद

खुदा को जिस्म नहीं और नबी बेसाया
मोहम्मद मज़हरे असरार मुबारक बाशद

बाइसे रहमते मीलादे मोहम्मद बरसी
आशिके बे रिया सरशार मुबारक बाशद

रफअते जिक्र में हामिद है तेरा खुदा
पीर फहमी तेरा अज़कार मुबारक बाशद

जान से जाना ही इस राह में शिफा मारुफ
खुश्बूए गेसुए बीमार मुबारक बाशद

नमाज़ें आरिफ़ी

तू वसफे गुल बहार है तू अदाए महबूबे दिलबरी
तुझे देखना ही नमाज़ है तेरी याद ही है बंदगी
टपके पसीना जिस जगह पैदा हुए हैं गुल वहाँ
महके जहान सारा ये मुश्को गुलाबो अंबरी
ऐ शमए देर व हरम तू ही मुहरिमे लौहो क़लम
परवाना वार फिरा करुँ तेरे गिर्द ऐ पयम्बरी
हुस्ने अजल इश्के अबद झुके तेरे आगे जबीन सब
सजदा करे मलाइका तेरा दर बना है मसजूदी
ऐ शमए हक़ नूरे खुदा तेरा आईना है वह आईना
तेरी साज़ो आवाज़ में बजे हा हू हे की बांसुरी
शमसो क़मर ये कहकशां तेरे वासते ये जहाँ सजा
अर्जो समा खुल्दे बरीं तेरी ज़ात पे है मेहवरी
पीर फैहमी तेरी नज़रों से पाया हूँ में रब्बुलअुला
नहीं डर मुझे सरे राह का मेरे साथ तेरी है रहबरी
मारुफ ये सारे जहान में लासानी तुझको सनम मिला
दो जहां जिसमें है बुलबुला तेरी ज़ात है वह समंदरी

काबे की हक़ीक़त

मोहम्मद सा कोई न पैदा हुआ है
मोहम्मद से जग में उजाला हुआ है
मोहम्मद को देखा वह देखा खुदा को
खुदा का मोहम्मद ठिकाना हुआ है
अर्शे बरीं या के फर्शे ज़मीं पर
मोहम्मद का हर जा पुकारा हुआ है
स्याह क्यों है काबा हक़ीक़त समझ लो
मोहम्मद का साया ये काबा हुआ है
है आदम की बख्शिश इन्हीं के ही दम से
हम बेकसों का सहारा हुआ है
उन्हीं से हैं रौशन वली पीर सारे
उसी नूर का सब ये जलवा हुआ है
नामे मोहम्मद पे लब चूमते हैं
उनके ही इश्क का उछाला हुआ है
खुदा ने कहा जो तू है वही मैं हूँ
कब तुमसे महबूब परदा हुआ है
मेरे पीर फैहमी नहीं जिनका सानी
नहीं उनसा कोई भी पैदा हुआ है
मोहम्मद मोहम्मद पुकारुंगा हरदम
मारुफ मोहम्मद पे शैदा हुआ है

लुटा देंगे

सरकार की उल्फत में हम जां को लुटा देंगे
हम ज़िक्र मोहम्मद को सांसों में बसा देंगे
उश्शाक़ का काबा है जिसे कहते मदीना तुम
उस बैतुलहरम पर हम सर अपना झुका देंगे
नज़रों में है बैतुल्लाह और दिल में मदीना है
वह काबा है ईमां का दुनिया को बता देंगे
अंजान हक़ीकत से गाफिल है जो खुद से
गुमकिरदह मुसाफिर को सही राह दिखा देंगे
ये इश्के मोहम्मद का सरशार नशा छाया
उस जलवे जानां को नज़रों में छुपा देंगे
उस नूरे मुहम्मद को पीर फैहमी में जो देखा
उस राज़े हक़ीकत पर सर अपना कटा देंगे
ये शाने मोहम्मद ही ये शाने खुदा मारुफ
इस शाने मोहम्मद पर हम सब कुछ लुटा देंगे

अन्वारे खुदा

नूरे खुदा बनकर नबियों का इमाम आया
सल्ले अला पढ़ो सब मोहम्मद का नाम आया
जो लामकां का मेहमां महबूबे किबरिया है
मेराज में जिनपर अल्लाह का सलाम आया

अल्लाह का आईना हैं मेरे रसूले अकरम
मोहम्मद की जुबां बनकर अल्लाह का कलाम आया
कुदरत के सब नज़ारे मोहताज हैं तुम्हारे
जिनपर खुदा है शैदा वहा आली मकाम आया

आशिकाने मुस्तफा है जो दिलो जान से कुर्बां
उनपर ही रहमतों का हरदम पयाम आया
कोई नबी है ऐसा मेरे रसूल जैसा
उम्मत के ग़म से जिनको न कभी आराम आया

शाफअे रोज़े मेहशर है साक़ी हौज़े कौसर
फैहमी पिया के हाथों तहूरा का जाम आया
साँसों में कलमा तेरा आँखों में तेरी सूरत
किस शान से ये तेरा मारुफ गुलाम आया

कातिबे मुख़्तार

हो गया आपका दीदार या रसूलअल्लाह
दिल के आईने में अनवार या रसूलअल्लाह
मेरा बिगड़ा मुक़द्दर को संवारा तुमने
आप हैं कातिबे मुख़्तार या रसूलअल्लाह
आपके कलमे का जिनको सहारा न मिला
उन्हीं का दिल है मुरदार या रसूलअल्लाह
तुम्हारी मोहनी सूरत का नज़ारह जो किया
तुम्हारा हो गया बीमार या रसूलअल्लाह
खुदा भी है तुम्हारा और खुदाई क़ब्ज़े में
होगा आशिक़ का बेड़ा पार या रसूलअल्लाह
अंबिया औलिया अस्फिया गदा हैं सारे
दोनों आलम के हो सरदार या रसूलअल्लाह
तुम्हारे दर से ज़माने ने रौशनी पायी
सबसे ऊँचा है दरबार या रसूलअल्लाह
सुकूने दिल की दवा बाटते हैं पीर फैहमी
दिलो जां आपपे निसार या रसूलअल्लाह
खुलासा कर दिये होते लेकिन मारुफ
शरा की सर पे है तलवार या रसूलअल्लाह

मोहम्मद की गली में

आदम का दम बनाया मोहम्मद तेरी गली में
क्या खेल है रचाया मोहम्मद तेरी गली में
तुम हो ख़िज़र के रहबर पेशवाए अंबियाए हो
मैं ने खुदा को पाया मोहम्मद तेरी गली में
हर दम के तुम गवाह हो कलमे के राज़दां हो
कलमे का रम्ज़ पाया मोहम्मद तेरी गली में
रुहुलअमीन आते हुक्में खुदा सुनाते
पैग़ामे हक़ सुनाया मोहम्मद तेरी गली में
सरकारे दोजहां हो महबूबे किबरिया हो
काबे ने सर झुकाया मोहम्मद तेरी गली में
होता रहेगा अब तो हर दम में आना जाना
अपनी गली को पाया मोहम्मद तेरी गली में
जुलमत कदे में तुमने हक़ की शमा जलाई
घर घर उजाला आया मोहम्मद तेरी गली में
क्या ख़ाक जाने तुमको यहां लोग पीर फैहमी
बुर्क़ा पहनके आया मोहम्मद तेरी गली में
तेरी अता के सदक़े तेरे करम के मारुफ
राहे बक़ा को पाया मोहम्मद तेरी गली में

दीदारे हसरत

या मोहम्मद मुझे दीदार दिखाना होगा
मीम का परदा चेहरे से हटाना होगा

तुम्हारे दीद के प्यासों का भरम रख लो नबी
नज़अ में आके मुझे जलवा दिखाना होगा

तुम्हारे दम से ही आदम के दम में आया दम
मेरे तारे दम में मुझे आके मनाना होगा

दूई के सदमें कब तक उठाउंगा मैं
मुझे इस रंजो अलम से छुड़ाना होगा

कौन है तेरे सिवा गोरे ग़रीबां में
इस ग़रीब ख़ाने में आना जाना होगा

यूं आसां नहीं मुनकिर का सामना करना
तेरी हर साँस में कलमे को सुनाना होगा

इस तरह रसमे उल्फत को निभाना होगा
मुझ गुनहगार को दामन में छुपाना होगाा

काफी नहीं इक़रार ही तसदीक़ करो
पीर फैहमी से राज़ कलमे का पाना होगा

जिसे हर शै में जलवा देखना है तो मारुफ
यार का चेहरा नज़रों में जमाना होगा

चेहरा मोहम्मद का

चेहरए मोहम्मद का आँखों में छुपाया है
बारहा नज़र आया आपही का चेहरा है

इश्क़े मोहम्मद में खो गया हूँ कुछ ऐसे
होश नहीं बाक़ी जबसे तुमको देखा है

सरतापा मोहम्मद को जबसे तुममें देखा है
जा बजा नज़र आता आपही का चेहरा है

जो तुम्हें नहीं देखा नाबीना जहां का वह
जायेगा दोज़ख़ में जो नहीं तुम्हारा है

कलमे को मोहम्मद के जो नहीं है पाये
देख लेना महशर में उनका मुंह काला है

बज़्मे फ़क़ीरी में मैंने तो खुदा पाया
खेल नहीं वाएज़ जान का गंवाना है

तुम हटाओ ज़रा चिलमन देख लू मोहम्मद को
फैहमीं पीर मे मेरा छुपा मेरा कमली वाला है

शम्माए मोहम्मद को सीने में किया रौशन
कब्र नहीं मारुफ नूर का बिछौना है

रुखे मोहम्मद

अल्लाह ने जब देखा रुख़े ज़ेबा मोहम्मद का
खुदा खुद पढ़ रहा है देख लो कलमा मोहम्मद का

अपने नूरे आज़म पर अल्लाह भी शैदा हो गया
बेखुदी में सर झुकाकर कर लिया सजदा मोहम्मद का

बेनाम ही जीता रहा गंजे ख़फी में छुप कर
खुद की ही पहचान की ख़ातिर ले लिया बुर्क़ा मोहम्मद का

काबा सनम ख़ाना बना था ये भी देख लो ज़रा
बुत कदे सब गिर गये देखकर जलवा मोहम्मद का

मेअराज की वह रात थी या राज़ की बात थी
राज़ पाकर हो गया मैं फिर दीवाना मोहम्मद का

पीर फैहमी में देखा हुस्न मेरे यार का
देखकर सूरत तुम्हारी पढ़ लिया कलमा मोहम्मद का

मारुफ काशाना तेरा और ऊँचा हो गया
बन गया है तेरा दिल अब मदीना मोहम्मद का

मनक़बत हज़रत ग़ौसुल वरा

मज़हरे ज़ाते खुदा हैं हज़रते ग़ौसुलवरा
नूरे नबी नूरे खुदा हैं हज़रते ग़ौसुलवरा

जा नशीं हो तुम नबी के और महबूबे खुदा
हर वली के दिलरुबा हैं हज़रते ग़ौसुलवरा

है चिराग़े क़ादरी रौशन तुम्हारे नाम से
सरतापा नूरे खुदा हैं हज़रते ग़ौसुलवरा

डूबी कश्ती को तिराना और मुर्दों को जिलाना
काम अदना आपका है हज़रते गौसुलवरा

तुम शहनशाहे विलायत और अमीरे कारवां
हर तरफ जलवा नुमां हैं हज़रते ग़ौसुल वरा

है विलायत की सनद मोहरे विलायत है क़दम
जिसके कंधे पर रखा है हज़रते ग़ौसुलवरा

आप कलमे के धनी हो और इरफां के ग़नी
काबए ईमां बना है हज़रते ग़ौसुलवरा

पंजतन पाक की मुंह बोलती तसवीर हैं
मसदरे सिर्रे अना हैं हज़रते ग़ौसुलवर

मैकदे में आपके बटती शराबे माअरफत
आरिफों के रहनुमा हैं हज़रते ग़ौसुलवरा

पीर फैहमी आपकी निसबत से पाया हूँ खुदा
तुमको नज़रों ने कहा है हज़रते ग़ौसुलवरा

सर झुकाकर ख़ाकसारी आजज़ी से है कहे
ख़ाकपा मारुफ बना है हज़रते ग़ौसुलवरा

अजमेर वाले ख़्वाजा

अजमेर वाले फेरो न खाली
बिगड़ी बना दो हिंद के वाली

अजमेर में एक धूम मची है
शाहे मदीना की महफिल सजी है
शान तुम्हारी है सबसे निराली

करदो करम से पार सफीना
मुश्किल हुआ तुम बिन जीना
देख हमारी ख़स्ता हाली

हाल ग़रीबो का तुम पे अयां है
तेरी नज़र में कौनो मकां है
दर पे ख़ड़े हैं तेरे सवाली

दुखियों ने तुम को ख़्वाजा पुकारा
बेकस ने तुमको ख़्वााजा पुकारा
देख नज़र इक तू मेरे वाली ...

मुझको ग़रीबी ने आके घेरा
खुशियों ने मेरे दामन को छोड़ा
ग़म की घटा है छाई सरपे काली

मुझको मिटाने ज़माना खड़ा है
मौत व हयात का झगड़ा बड़ा है
नज़रें हैं तेरी बक़ा की प्याली..

क़दमों पे तेरे दुनिया पड़ी है
लौहो क़लम के आप धनी हैं
थामी है मैंने रौज़े की जाली

पीर फैहमी तेरी अता है
दम में कलमा जारी हुआ है
हर जिक्र पे है कलमा ही भारी

पूरी हो मारुफ की दीदारे हसरत
वरना हँसेगी तुझपे ये कुदरत
ख़ाली जाए न शाह सवाली...

घूँघट

घूँघट के पट खोल ज़रा मोरे ख़्वाजा
हिंद के राजा वह महाराजा
अली का राज दुलारा नबी के आंख का तारा

सोड़ा मुख प्यारा सरपे मुखट है
आली नसब ख़्वाजा आला हसब हैं
सब वलियों का उजयारा मोरे ख़्वाजा...

लाज चुनर की रख लो ख़्वाजा
चश्मे अता हो बेकस पे ख़्वाजा
सब ग़रीबन का दाता मोरे ख़्वाजा

शाहे मदीना के नूरे नज़र हो
फ़ातिमा ज़ोहरा के लख़्ते जिगर हो
ख़्वाजा उस्मा का प्यारा मोरे ख़्वाजा

लाज ग़रीबों की तुमने रखी है
झोली मुरादों की तुमने भरी हैं
तुम से अता हैं कलमा मोरे ख़्वाजा

चिश्तिया सागर आज बटेगी
उस्मां के घर की नेअमत मिलेगी
सदक़ा अता होगा उस्मां का मोरे ख़्वाजा

फहमी पिया में ख़्वाजा दिखे हैं
ख्वाजा पिया में ग़ौस दिखे हैं
दामन मिला मारुफ आला मोरे ख़्वाजा

मनक़बत हज़रत हाजी मलंग

हाजी मलंग हैं नूर का दरिया
जारी हुआ है अल्लाह अल्लाह
फैज़ो करम है सबपे एक सा
मरहबा मरहबा.....

गंजे ख़फी कर दो अता आये हैं दूर से
रख लो भरम कर दो करम वासते हुजूर के
ओ सांवरिया ओ बलमवा
आपसे पर्दा कब हुआ .....

इब्ने सखी इब्ने अली इब्ने दिलावर
तुमसे अता हुआ हमें शाफए महशर
मेरे दिलबर मेरे हमदम
आपसे सब अता हुआ...

शाने नबी नूरे खुदा मिसले पयंबर
दोनों जहां ख़म है जहां तेरा है वह दर
मेरे जानां जाने जानां
आपही हैं मेरा मुद्दुआ...

कुतब जहां कुतबे मलंग कुतबो कलंदर
ज़ाते नबी ज़ाते खुदा दोनों हैं अंदर
आप हैं दाता आप हैं आक़ा
आप हैं शहे दो सरा

रोज़ा बना खुल्दे बरीं शाहे मलंग का
हुरो मलक करें अदब शाहे मलंग का
ज़िक्र फैहमी विर्दे मारुफ
आपसा न दूसरा हुआ...

मनक़बत दर्शाने हज़रत पीर आदिल

चश्मए फैज़ो अता हैं हज़रते आदिल पिया
मुम्बए जूदो सख़ा हैं हज़रते आदिल पिया
एक निगाहे फैज़ से लाखों बने हैं औलिया
औलिया के पेशवा हैं हज़रते आदिल पिया
बट रही है कलमए तैयब की नेअमत आज भी
अपने खुलफा में छुपा हैं हज़रत आदिल पिया
कलमए तैयब का नग़मा दम के अंदर आ गया
दम में आकर सनम जम हुआ हैं हज़रते आदिल पिया
कैसे मुमकिन है कि रुसवा होगा दीवान तेरा
दामने गौसुलवरा हैं हज़रते आदिल पिया
खोलकर शश्जहत को दर्स इरफां का दिया
वाकिफे सिर्रे खुदा हैं हज़रते आदिल पिया
नूरे नज़र महताब शाह लख़्ते जिगर शाहे यमन
क़ादरी चिश्ती अता हैं हज़रते आदिल पिया
पीर फैहमी आपका मिलना ही सब कुछ मिल गया
पीरे कामिल हक़ नुमा हैं हज़रत आदिल पिया
शाने शाहाना रहे ये दिल फक़ीराना मारुफ
आपके दरका गदा हैं हज़रते आदिल पिया

इल्तिजा

तेरा कलमा हमें भा गया
जिससे शैताँ भी घबरा गया
ढूँढा दैरे हरम
था मुझमें मेरा सनम
तू जहाँ है वहीं वह बहम...

तेरा कलमा है दम में सनम
बना दिल मेरा बैतुलहरम
अहले हक़ देख ले
खुद में रब देख ले
मेरा काबा है मेरा सनम

नाम तूफां में जो ले लिया
सुन के तूफां भी थर्रा गया
बरसा अबरे करम
दूर हो गये ग़म
रखा मारुफ का तुमने भरम

मेरे मौला तू कर दे करम
साथ कलमे के निकले ये दम
रहो पेशे नज़र मेरे आठों पहर
इतना हो जाये मुझपे करम

शम्मए हक़ की तू रोशनी
तुझमें पोशीदह गंजे ख़फी
क्यों फिरे दर बदर
सब है तुझ में मगर
पहले सर को अपने कर दे ख़म

पीर फहमी निगाहे करम
वक़्त मुश्किल बड़ा बे रहम
इक नज़र देख ले
अब इधर देख ले
टूटी कश्ती किनारा है कम

राज़े कलमा

मुर्शिद ने राज़ कलमे का जिनको बता दिया
आशिक ने अपना काबा वहीं पर बना लिया

अपनी अना के जाल ही में फंस गये थे हम
मिटा कर खुदी को हम को खुदा से मिला दिया

बेलौस बंदगी का सिला हमको मिल गया
कौसर का जाम नज़रों से हमको पिला दिया

इक दानए गन्दुम पर इतनी बड़ी सज़ा
खुल्दे बरीं से मौला ने हमको गिरा दिया

हर आन में करते हैं हम अर्श का सफर
मेराज के राज़ को जिसने है पा लिया

हर गिज़ उनकी बंदगी मक़बूले रब न हो
बिन देखे जिसने सजदे में सर को झुका दिया

फैहमी पिया की ज़ात पर कुर्बान हो गया
कुरआन के कुरआन को हममें बता दिया

फसम्मो वजहू का भी लो मसला हल हुआ
मारुफ की नज़र में वह चश्मा लगा दिया

कलमे वाला सनम

है कलमे वाला मेरा सनम
खुदा का हुआ हम पे फ़ज़्लो करम

तसव्वुर तुम्हारा मेरी बंदगी है
तुम्हें देखना क्या खुदा से है कम

हर दम को मेरे जिंदगी देने वाले
तुम्हारे करम से है हमारा भरम

जबीने नियाज़ झुकी सजदा करने
जहाँ पे तुम्हारा था नक्शे क़दम

तुम्हारी जल्वानुमाई हुई जब
गिरे कलमा पढ़ते ही काबे के सनम

ज़माना भी करवट लेने लगा है
के बदला हवाओं ने अपना क़दम

पत्थर भी कलमा पढ़ने लगे हैं
तुम्हें देखकर वह मेरे सनम

मेरे पीर फैहमी का कलमा पढ़ा जब
बना मैं मुसलमां आया दम मे दम

खुदा और नबी सारे पढ़ते हैं कलमा
मारुफ कलमा पढ़ते उठेंगे अदम

दीवाना हो गया

तेरा कलमा जिसने पाया वह तेरा हो गया
तेरे ज़िक्र से दम में उजाला हो गया
क्या तूने पिलाया दीवाना हो गया
नज़र का मिलाना बहाना हो गया

नज़र में जिगर में मेरी हर नफस में
मेरी जान तू है मेरी जान तू है
कई राते गुज़ारी सवेरा हो गया
मैं गुम हूँ तुझी में सब तेरा हो गया

तेरे ज़िक्र की है मुझे फिक्र हर दम
तेरे बिन लगे न मेरा ये तन मन
मैं होश गंवाया दीवान हो गया
मेरे दिल में तेरा ठिकाना हो गया

तुझे देखना ही इबादत है मेरी
तुझे याद करना रियाजत है मेरी
कलमे का फिर भी बहाना हो गया
ये कलमे का राज़ तो सुहाना हो गया

मेरे पीर फैहमी तुम्हारा ही जलवा
है अर्शे बरीं पर है फर्शे जमीं पर
तुम्हीं से ही रौशन ज़माना हो गया
इस आलम में सारा उजाला हो गया

मेरे दम के मालिक मेरे दिल के मालिक
मेरी रुह के मालिक मेरी जाँ के मालिक
ये मारुफ खुदा भी तुम्हारा हो गया
मैं हो गया तुम्हारा वह मेरा हो गया

आमदे कमाल

आके भी न आना गज़ब का कमाल है
हर रंग में हर गुल में तेरा जमाल है

खोया ईमान हाथ से जो देखा आपको
खुद कहके शिर्क तुम ने मचाया वबाल है

आदम का दम है लेकिन ज़ीना है आपका
आदम में आना जाना तेरा बेमिसाल है

मसजूदे मलाइक बने आदम सफीअल्लाह
आदम के आईने में किसका जमाल है ?

ग़ैब की आड़ में अैब था छुपा
होते ही आश्कारा बदला खयाल है

गुल मुस्कुरा रहे हैं काँटों की सेज पर
कुदरत का कारख़ाना समझना मुहाल है

खुद रफतगी में देखा तमाशा अजीब तर
हर चीज़ को फना है बाक़ी ख़याल है

पीर फैहमी राज़े गोहर सीने में पोशीदा
पाए जो उसको कोई वही लाज़वाल है

ज़िकरो फिक्र की मंज़िल आला तो है मारुफ
मफऊल हूँ या फाएल बस ये सवाल है ?

मस्हफे रुख़

मस्हफे रुख़ को पढ़ाओ तो बात बन जाए
दिल व निगाह में समाओ तो बात बन जाए

करेंगे होश का मेरी तवाफे मैख़ाना
के ज़र्फ ऐसा जो पाओ तो बात बन जाए

मताए इश्क से रोशन हैं तेरे दीवाने
ख़जाना ऐसा लुटाओ तो बात बन जाए

ये दम है उनका तसद्दुक ये जां है उनपे निसार
मेरी रग रग में समाओ तो बात बन जाए

सजदा रेज़ी से पड़ेंगे फ्कद निशाने जबीं
नमाज़े वस्ल पढ़ाओ तो बात बन जाए

ढूंढने वाले तो ढूंढा करें दैरो हरम
खुदी में रब को जो पाओ तो बात बन जाए

मुकामे दिल को समझना ये सबकी बात नहीं
पीर फैहमी को मनाओ तो बात बन जाए

भटक रहे हैं अंधेरों में कितने और मारुफ
इश्क़ की शमा जलाओ तो बात बन जाए ।

नहीं होती

हुस्न की इब्तिदा नहीं होती
इश्क़ की इन्तिहा नहीं होती

नब्ज़े दौरां को देखने वालो
हर मर्ज़ की दवा नहीं होती

मेरी बुनियाद है खता पे रखी
कैसे कह दूँ खता नहीं होती

सलीक़ा जानता हूँ दस्ते दुआ
हर घड़ी इल्तिजा नहीं होती

एक शैतान को बख्श देता अगर
कमी रहमत में क्या नहीं होती

तारे दम जिन के हैं कलमा रवां
उन्हें हरगिज़ सज़ा नहीं होती

हर क़दम को उठा संभल के ज़रा
हर घड़ी भी अता नहीं होती

सरापा मौत है यार मेरा
कैसे कह दूँ क़ज़ा नहीं होती

तेरे दर से वही मुकरते हैं
जिन्हें शर्मो हया नहीं होती

पीर फैहमी से जो हैं वाबिस्ता
रद्द उनकी दुआ नहीं होती

उन्हीं का नक्शेपा है ये मारुफ
जिनसे रहमत जुदा नहीं होती

सुहागन

जब से हुआ है दर्शन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
मैं बन गयी सुहागन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
तेरे नाम की है दौनी तेरे नाम का है कंगन
माथे पे मेरे चंदन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
सातों मेरी सहेली खेले हैं मुझसे हल्दी
मैं बन गयी हूँ जोगन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
हाथों रचाई मेंहदी किस बात की है देरी
तू ही तो मेरा दर्पण हरे गुम्बद के ख़्वाजा
सिंगारे पंजतन का ज़ेवर कुन्तो कन्ज़न का
मैं चिश्तिया हूँ दुल्हन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
अपना मुझे बना ले सिन्दूर तू लगा दे
तन मन से हूँ अर्पण हरे गुम्बद के ख़्वाजा
कलमे के हैं बराती महताब शाह हैं क़ाज़ी
अपना बना ले साजन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
शबे वस्ल पीर फैहमी तुमसे मिलाए आदिल
अब तो हटी है चिलमन हरे गुम्बद के ख़्वाजा
तेरे नाम की ही माला मारुफ गले में डाला
तब से हुआ मैं रौशन हरे गुम्बद के ख्वाजा

इल्तिजा-ए-पीर

मेरे मुर्शिद मेरे पीर रे
आजा कलमा पढ़ा दे मेरे पीर रे

अल्लाह न जानू मोहम्मद न जानू
कल्मे की मैं तो हक़ीक़त न जानू
कलमा पढ़ा दे रब से मिला दे
मन की जुबां को तू खोल रे

पीर नूरानी है कलमा नूरानी
पढ़ ले जो दिल से तो दिल हो नूरानी
फर्शे ज़मीं क्या अर्शे बरीं क्या
कलमे का ही है बोल रे

काबा न जाऊँ मैं काशी न जाऊँ
दैरो हरम में तुझको ही पाऊँ
मैं हूँ दीवाना खुद से बेगाना
हर जा कलमे का खेल रे

मुल्ला न जानू मैं पण्डित न जानू
आदम की मैं तो हक़ीक़त न जानू
आलिमे ज़बां को बंद रहने दे
वरना खुल जाए पोल रे

कलमाए तय्यब के राज़ को पाने
आया हूँ दरपे सर को झुकाने
जामे इरफां मुझ को पिला दे
मन अरफ को तू खोल रे

पीर फैहमी का दामन पकड़ ले
ईमां से अपनी झोली को भर ले
बिन मांगे ही देते हैं आक़ा
मारुफ ज़बां मत खोल रे

राज़े हक़ीकत

मोहम्मद का घराना है मुर्शिद ही ख़ज़ाना
कल्माए तय्यब से अब रबको मनाना है

क्या ख़ाक जाने कोई अज़मते ख़ाके आदम
फर्श पे हो के भी अर्श पे ठिकाना है

तू आईना हक़ीक़त का मैं जलवा हूँ कुदरत का
एक ही दोनों मगर दूई का बहाना है

क़तरे में समन्दर है तूफाँ की रवानी है
इस बहरे तजल्ला का सब को राज़ पाना है

वस्ले हक़ गर चाहिये तो सर को झुका वाएज़
इस राज़े हक़ीक़त को पाना और छुपाना है ।

तू शम्मए वहदत है मैं तेरा हूँ परवाना
ये हुस्न और इश्क का रिश्ता तो पुराना है

मोहम्मद का घराना क्या आदम का ठिकाना क्या
ये राज़ समझने को एक उम्र गंवाना है

कल्मे के तराने से मुर्शिद के फसाने से
सोई हुई दुनियाँ को ख़्वाबों से जगाना है

यारब वह हुनर दे दे जुबाँ में असर दे दे
मेरे पीर फहमी को हर अदा से मनाना है

कल्मे का ख़जाना है मारुफ तो बहाना है
महबूब का सदका तुझको तो लुटाना है ।

काबे का काबा

काबे का नज़ारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का
मोहम्मद का ही चेहरा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

हज की ही तमन्ना थी काबा ही चला आया
हाजी ने पुकारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

फसमू वजहुल्लाह क्या तू न पढ़ा हाफिज़
कुरऑ ने पुकारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

क़तरे में ही दरिया था पर मैं न समझ पाया
कुदरत का इशारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

गैरों की ज़रुरत क्या जब तुमको ही थामा है
दो आलम का सहारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

सुनकर ये सदा मेरी अर्शे बरीं ने कहा
अपना तो गुज़ारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

जब खुद को मिटाया है पीर फैहमी को पाया है
नज़रों में उतारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

मारुफ लोह व क़लम अर्शो कुर्सी आलम
मोहम्मद का उतारा है चेहरा मेरे मुर्शिद का

राम-ए-विलायत

तुम शाहे विलायत हो ऐ पीरे मैख़ाना
तुम शाने करामत हो ऐ साकिये मैखाना
मदहोश मुझे करदे एक जामे विलायत से
ता हश्र रहे आबाद तेरा क़ादरी मैखाना
संगे दरे जाना पे करता हू जबीं साई
काबे से भी बढ़ के है मेरे पीर का मैखाना
मुर्दों को किया ज़िन्दा क्या शाने करामत है
तेरी शाने विलायत पे मैं हो गया दीवाना
मैं रिन्द तेरा साक़ी खाली नहीं लौटूँगा
नज़रो से पिला साकी पैमाने पे पैमाना
तू आरिफे कामिल है अल्लाह से है याराना
तेरी शान है शाहाना अंदाज़े फक़ीराना
कामिल पीर फहमी तुझसा न वली देखा
जिस पर भी निगाह डाली उसे कर दिया दुरदाना
पुरनूर मुझे कर दे एक नज़रे इनायत से
रौशन हो जाए मारुफ का काशाना

चश्मे पुरनम

चश्मे पुरनम हैं दिल भी है बेक़रार
साँसों का आखरी ले लो सलाम यार

होशो खिरद भी साथ न देंगे
इल्म व हुनर भी साथ न देंगे
तेरी अता पर है सारा ये मदार..

तेरे दीवाने को यूँ मत टालो
कासए दिल में कुछ तो डालो
चश्मे करम के हैं तेरे तलबगार

कारवां जहाँ का यू ही रहेगा
आदम का आना जाना रहेगा
लगते रहेंगे मेले और कितने बाजार..

हिचकी में तेरी याद नेहां है
महकी फिज़ा में तेरा बयां है
दम का भरोसा क्या है आओ दिलदार...

टूट न जाए ये साँसों की लड़ियाँ
बिखर न जाए ये दम की कलियां
बाकी हैं साँसें कुछ दम भर का इंतेज़ार ...

पीर फैहमी तुम मुझमें बसे हो
फिर भी नज़र से कैसे छुपे हो
मारुफ में दम है कम दिखलाओ दीदार...

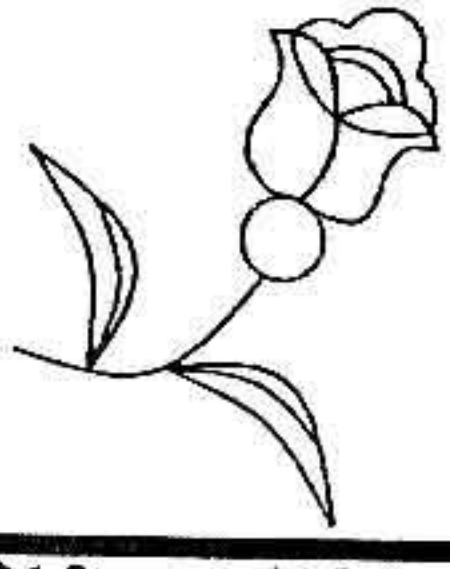

आह

आह करना भी तेरे इश्क में रुसवाई है
लब तो खामोश मगर ऑख ये भर आई हैं

तरके तअल्लुक का सबब पैदा भला हो कैसे
ये मेरा सर ही नहीं दिल भी तमन्नाई है

बन्दए इश्क ने मेराजे वफा पाई है
अक्ल नाबीना खड़ी बनके तमाशाई है

अहले निसबत का भरम रखना पड़ेगा तुमको
आ भी जा मेरे सनम जाँ लब पे उतर आई है

कितने इल्ज़ाम लगा देती है अहले दुनियाँ
कौन है तेरे सिवा मेरा शनासाई है

आज भी अहले तफक्कुर है कशाकश में पड़े
नुकता पेचीदा मगर कोई तो हरजाई है ।

पीर फैहमी ने अता की है वो दर्दे उल्फत
दर्द हद से जो बढ़ा जब तो शिफा पाई है

इश्क़ के नक्श मिटाए न मिटेगा मारुफ
सूरते जाँना तेरी दिल में उतर आई है

सवाल व जवाब

सवाल : वह क्या है ?
जवाब : वह अजमेर है ।
सवाल : उस अजमेर में ?
जवाब : मेरे ख्वाजा हैं ।
सवाल : ये ख्वाजा कैसे दिखते हैं ?
जवाब : पीर फैहमी जैसे दिखते हैं ।
सवाल : ख्वाजा हैं कैसे तुमने उनको मान लिया ?
जवाब : मन की आँखों से मैने उनको जान लिया ।
सवाल : सोने का कलस है देख मेरे ख्वाजा पर ?
जवाब : ख्वाजा का कलस है देख मेरे फैहमी के सर पर ।
सवाल : पानी पे हुकूमत चलती है मेरे ख्वाजा की ।
जवाब : सासों पे हुकूमत चलती है मेरे फैहमी की ।
सवाल : दुनियाँ उनको ख्वाजा ख्वाजा कहती है ?
जवाब : फहमी को दुनियाँ महाराजा कहती है ।
सवाल : उनके दर से काबा दिखता है ?
जवाब : इनका दर ही मदीना लगता है ।
वह क्या है.....
सवाल : सब वलियों का ख्वाजा राजदुलारा है
जवाब : पीर फैहमी भी सब वलियों का प्यारा है।
सवाल : ख्वाजा के दर को बाबे जन्नत कहते हैं ? ।
जवाब : फैहमी के दर को बाबे रहमत कहते हैं

सवाल : मेरे ख्वाजा का हाशमी घराना है ?
जवाब : मेरे फैहमी का अर्श पे ठिकाना है ।
सवाल : ऑखे हैं दो पर तुझको दिखता है कितना ?
जवाब : क्या देख कर भी हो गया है तू अंधा ।
सवाल : मेरे ख्वाजा की मोहनी मूरत है ?
जवाब : नूरानी फैहमी की सूरत है ।
इरफानी ये महफिल है इस महफिल में पीर फहमी हैं ।
सवाल : पीर फहमी कैसे दिखते हैं ?
जवाब : पीर आदिल जैसे दिखते हैं ।
सवाल : पीर आदिल कैसे दिखते हैं ?
जवाब : मैहताबअल्लाह जैसे दिखते हैं ।
सवाल : मैहताबअल्लाह कैसे दिखते हैं ?
जवाब : कदीरअल्लाह जैसे दिखते हैं ।
सवाल : कदीरअल्लाह कैसे दिखते हैं ?
जवाब : करीमअल्लाह जैसे दिखते हैं ।
सवाल : करीमअल्लाह कैसे दिखते हैं ?
जवाब : मेरे ख्वाजा जैसे दिखते हैं ।
सवाल : मेरे ख्वाजा कैसे दिखते हैं ?
जवाब : पीर फैहमी जैसे दिखते हैं ।
सवाल : पीर फैहमी कैसे दिखते हैं ?
जवाब : पीर मारुफ जैसे दिखते हैं ।

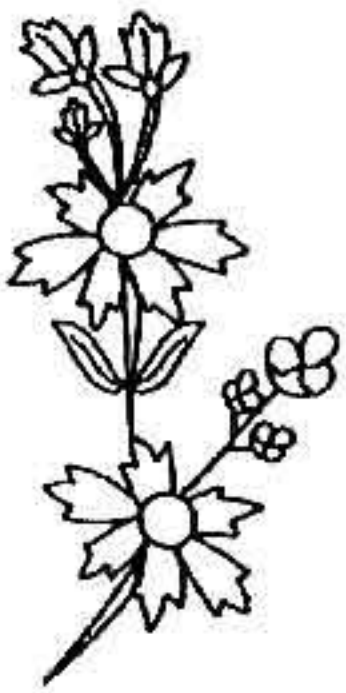

दूई को हमने छोड़ दिया,
फैहमी को ख्वाजा मान लिया ।

कोशिश न कर

ऐ हुस्न अज़ल ऐ माहे मुबीं
मुझसे चेहरा छुपाने की कोशिश न कर

मैं तेरा आईना तू मेरा आईना
मुझसे खुद को छुपाने की कोशिश न कर

मन अरफ का हूँ कुरआँ मान ले
कद अरफ की हूँ तफसीर जान ले
ऐ मेरे दिलनशी तू ही मुझमें खफी
करके ला की नफ़ी आजा मेरे मकीं
छुपके मुझको सताने की कोशिश न कर

कुन्तो कन्ज़न का राज़ तू खोलकर
छुप गया क्यों है आदम में बोलकर
क्यों नेहां तू हुआ मुझको कुछ तो बता
मैं हूँ तेरा पता तू है मेरा पता
मुझसे छुपने छुपाने की कोशिश न कर...

मीमे अहमद का बुर्क़ा तू ओढ़ कर
तने ख़ाकी में रुह को छोड़ कर
ये तमाशा है क्या कहदो मुझको ज़रा
मैं न तुझसे जुदा तू न मुझसे जुदा
फिर ये बनने बनाने की कोशिश न कर..

पीर फैहमी तेरी मैं ख़ाक हूँ
जल चुकी हूँ मगर फिर भी राख हूँ
आ भी जा अब ज़रा रुख़ से परदा हटा
मैं तुझे देख लूं तू मुझे देख ले
अब बहाने बनाने की कोशिश न कर

जाना अच्छा नहीं यूं छोड़ कर
अपने आशिक के दिल को तोड़कर
मेरी जाँ तू बता क्या यही है वफा
है अज़ल से दीवाना ये मारुफ तेरा
मेरी साँसें चुराने की कोशिश न कर

रकसे बिस्मिल

रकसे बिस्मिल है ऐ यार दीद पाने को
एक नजर देख लो मुर्शिद तेरे दीवाने को

याद मे आप की हर साँस चलती ही रही
जिंदगी शमा की सूरत पिघलती ही रही

के दिल मे तेरी मूरत ☆ दिखा दो अपनी सूरत
जरा परदा हटाओ ☆ जरा जलवा दिखाओ
होश अजाए गा ☆ साकी तेरे दीवाने को

नारे नमरुद को फूलों मे बदलते देखा
इश्क की आग से पत्थर को पिघलते देखा

मेरे दिल के अन्दर ☆ बना है तेरा मन्दिर
तेरी पूजा करुं मैं ☆ तुझे सजदे करुं मैं
दैरो क्बा से गरज ☆ क्या तेरे दीवाने को

शम्मए तूर को फिर से जलाना होगा
जलवए यार सरे बाम दिखाना होगा

नजर से तुम पिलाओ ✯ मुझे अपना बनाओ
मुझे चाहे जलाओ ✯ मुझे चाहे जिलाओ
मस्तिए इश्क में ✯ तय्यार है ढल जाने को

मजहरे जात का हर सिम्त तमाशा देखा
ला, के परदे मे कसरत का तमाशा देखा

मकीने ला, मकां हो ✯ जमीन व आसमां हो
खुद हो राज़े हस्ती ✯ खुद ही राजदां हो
क्यों चले आऐ हो ✯ जानां मुझे बहकाने को

बहरे वहदत को कतरे मे सिमटते देखा
हम ने चिनगारी को शोलों में बदलते देखा

जिसे चाहो बनाओ ✯ जिसे चाहो मिटाओ
तेरे ही हाथ मे है ✯ जिसे चाहो जिलाओ
बनके फैहमी पिया ✯ आगाऐ बचाने को

चेहरए यार से परदे को उलटते देखा
शबे मेराज ये हम ने भी तमाशा देखा

जिसे चाहो बुलाओ ✯ जिसे चाहो गिराओ
खुद ही परदा बने हो ✯ खुद ही जलवा नुमा हो
बस यही राज है ✯ मारुफ बताने को

नज़रानए जानो तन

ये जाँ आप की है ये तन आप का
नगमा तारे नफस मे सुखन आप का

चांद तारो से अफजल मेरी मन्जिलें
कर रहा हूँ सफर मैं चलन आपका

मुझमें मेरे सनम की है सूरत छुपी
हो रहा मेरा अब मिलन आपका

चल रही रुह पे हुकूमत मेरी
आपकी है इनायत जेहन आपका

जिसको कहते शराबन तहूरा मग
उसमें मखफी लुआबे दहन आप का

खाने काबा से बढकर मेरा दिल हुआ
बन गया है मेरा दिल दकन आपका

मुश्क व अंबर पसीने से तेरे बने
कीमती है बहुत ही बदन आप का

पीर फहमी मेरे हैं बड़े ही सखी
हो अता मुझको दर्दे चलन आपका

गुलशने कादरी के हो माली मेरे
मारुफ गुल है तुम्हारा चमन आपका

साँचे-गुरु

साँचे गुरू पे तन मन वारी
बन के पुजारन साजन की

भाग की मारी मैं दुखयारी
जाऊँ कहाँ मैं लाज की मारी

कौन सुने मुझ पापन की
तेरे मिलन को उमरिया बीती

ताना देती है मेरी सहेली
लाज रख्खो मुझ बिरहन की

द्वारे पर मोरी अँखियाँ लगी हैं
तोरी दीद की खातिर खुली है

पट ये मोरी नैनन की
दम की रस्सी टूट रही हे

कितनी रतियाँ बीत रही हैं
आस मां तोरी दरशन की

चरनो मे उनकी ज्ञान की गंगा
नजरो मे उनकी अमृत वर्षा
जिसपे गिरी वो रोशन की

मन में मुरलिया हू हू बाजे
और ना दूजा कोई साजे
मैं हूँ दिवानी मोहन की

आवत जावत तन मे संवरिया
पर ना दिखे वो कैसी नजरिया
नजरें अता कर दर्शन की

बहुत कठिन है फैहमी नगरिया
पग मे छाले लब पे गुजरिया
बिबता सुनो इन असुवन की

हरी गुन गुरु है हरी रुप लाया
मारुफ गुरु मे हरी जो है पाया
वही है सुहागन साजन की

आमदे पीर

ऐ पीर तेरे आने से आलम मे बहारे आई
है नूर से रौशन सीना आँखो मे जलवा नुमाई

तेरे एक नजर के तालिब तेरी एक नजर पे कुरबां
तू जिस को चाहे नवाजे तेरे हाथ हैं सारी खुदाई

तू गनजे खफी का खजाना है नूर का तेरा घराना
आदम का तू है बहाना तू बन्दा तू मौलाई

तुझे देखना ही इबादत तेरे साथ है सारी कुदरत
तेरा जलवा राजे हकीकत क्या जाने तुझ को खुदाई

मुझे जामे तहूर पिला कर साँसों मे कलमा बसा कर
मेरे दिल को काबा बना कर किया रब से मेरी रसाई

पीर फैहमी तू है नगीना तू मेरा मक्का मदीना
मारुफ के सर पे देखों हे इश्क की बदली छाई

चेहरा मेरे मुर्शिद का

चेहरा मेरे मुर्शिद का हर हुस्न पे भारी है
पी कर तहूरा हम ने तस्वीर उतारी है

हर शय में जलवा तेरा हर जा पे तू ही तू है
आँखों में लिए फिरते तस्वीर तुम्हारी हैं
दोनों जहान मिलकर क्या खाक बुझाएँगे
इश्क मे तेरे ही जल कर वो आग लगाई है
हम तो बिलाल बन कर मेहफिल मे आगए हैं
काबा जेरपा होगा गर तुझ तक रसाई है
आँखो मे दम है जब तक देखूँ मैं सूरत तेरी
आँखों से साँसों तक एक तार लगाई हे
दैरो हरम मे बैठे जाहिद खुदा को ढूँडे
मुर्शिद के तसव्वुर में खुद रहमत बारी है
आदम से ले कर अब तक है कौन तेरे जैसा
हम ने इसी दुनियाँ मे एक उमर गुजारी है
राज व नियाज कह कर पीर फैहमी युँ बोले
कलमे का जिक्र सुन लो हर जिक्र पे भारी है

तसव्वुर में तेरे ही गुम हो गये हैं मारुफ
खुद में ही नजर आती तस्वीर तुम्हारी है

वही तो नहीं

जिनसे दैरो हरम जगमगाने लगे झिलमिलाने लगे
ये बतादो कहीं तुम वही तो नही वही तो नही
जिन के कदमो पे शाह सर झुकाने लगे इतराने लगे
ये बतादो कहीं तुम वही तो नही वही तो नही

जिनके कदमो का बोसा लिया अर्श ने
जिन का साया ना देखा कभी फर्श ने
जिनसे तारीक दिल नूर पाने लगे बल खाने लगे.....

क्यों फिजाओ में खुशबू सी छाने लगी
वो यहीं हैं कहीं हैं बताने लगी
हर कली मुँह अपना छुपाने लगे शरमाने लगे

जिनके गेसू दराजा जो बल खागई
जैसे अबरे करम की घटा छा गई
रोशनी दोनों आलम लुटाने लगे लुट जाने लगे

तेरे दीदार के सब तलबगार हैं
रुखे अनवर के सारे बीमार हैं
कितने दिल को वो तूर बनाने लगे जलाने लगे

बिजलियों ने हे तुझसे चमकना लिया
और गुलो ने हे तुझसे मेहकना लिया
वो आदम के दम मे आने लगे वो जाने लगे ...

तेरा जलवा सरे बाम आम हुआ
हर जबां पर एक ही नाम हुआ
पीर फेहमी का नारा लगाने लगे बल खाने लगे....

रूसे बिस्मिल है कोई तो बेहोश है
मारुफ राजदां ही तो खामोश है
लामकां दिल बना के समाने लगे छाने लगे
ये बतादो कहीं तुम वही तो नही....

जान व जिगर

जलाकर जान व जिगर जलवा तेरा देख लिया
छुपा था मुझ ही मे मेरा खुदा देख लिया

मेरी पुतली मे छुप कर तू जलवा नूमा
जा बजा तुझ को ही जलवा नुमा देख लिया

अरे वो अर्शेबरीं पर रहने वाले
इस जमी पर भी मकां हम ने तेरा देख लिया

लाख परदा गिरा था आप ही के उपर
हम ने हर परदा तेरा उठता हुआ देख लिया

राजे अहमद का मिलते ही ये जान लिया
मीम के बुरखे मे तुझ को छुपा देख लिया

ओढ कर जामए इन्सान को वो आया है
अलइन्सानूसिर्री में खुदा देख लिया

पीर फैहमी के तसव्वुर ने हमें समझाया
आदम की निदा मे है अयां देख लिया

मारुफ शाह तुम तो हमदम का सहारा लेकर
दम बदम तुझ को मेरी जाने जां देख लिया

जामे अरनी

नाम पे तेरे हर जाम लिया करते हैं
होश आने के लिए हम तो पिया करते हैं

लोग मैखाने के अन्दर भी डरा करते हैं
हम तो क़बे के अन्दर भी पिया करते हैं

आबे अंगूर को लंगूर पिया करते हैं
बादेह इरफान को आरिफ ही पिया करते हैं

मजहबे रिन्दी मे पीना हे नमाज
सलाते दाईमी हर दम मे अदा करते हैं

रगो मे बहता हे जो उस को तू लहू ना समझ
इश्क की मय को रग रग मे बहा लेते हैं

बादे मुरदन भी ना उतरेगा ये सर से नशा
खुम खाना जो ये सर को बना लेते हैं

जिस के हर कतरे मे पोशीदा हे ये आबे हयात
कतरा वहदत का वो नजरो मे छुपालेते हैं

पिरे फहमी तो बहरे मेखाना
दर्द बढ़ने की हर दम ये दवा देते हैं

जामे अरनी को पिए जा मारुफ
बस तेरी दीद की खातिर ही पिया करते हैं

उनवाने मोहब्बत का इतना ही फसाना है
एक तरफ है दीवाना एक तरफ जमाना है

आशिक की हकीकत को आशिक ही समझते हैं
गर सिमटे दिले आशिक फैले तो जमाना है

आशिक की बातो का मतलब ही निराला है
दीदार का पीना है और जिक्र का खाना है

उनवाने मुहब्बत

ये होश व खिरद वाले क्या जाने तेरी हस्ती
साकी की निगाहों मे अहमद का ठिकाना है

ऐ हुस्न दो आलम बे कस पे करम फरमा
बस तेरी मोहब्बत का साँसो मे तराना है

दिल होश नजर बाहोश है अपना कदम बाहोश
साकी ही समझता है यहाँ कौन दीवाना है

ऐ फैहमी पिया तेरी हम बन्दा नवाज़ी पर
सौ जान से हैं कुरबां मारुफ का घराना है

पलको पे बिठाते हैं नज़रो से गिराते हैं
इस तरह रस्मे उल्फत क्यों लोग निभाते हैं

पहले तो अपना कह कर सीने से लगाते हैं
फिर एक ही नजर मे बेगाना बनाते हैं

अपने और पराए मे क्या फर्क रहा नासेह
ये दिल मे रह कर भी मेरे दिल को दुखाते हैं

कहने को तो ये दुनिया सारी ही हमारी है
जब वक्त पड़ा भारी दामन को बचाते हैं

ये दिल व जिगर क्या है गर जान भी वो मांगे
तैगे खुलूस से हम गरदन को कटाते हैं

हम ने मकीने दिल जब आप ही को बनाया था
क्यों बैठ कर दिल मे नशतर को चुभाते हैं

पूछा तो चेहरे पर लाली चढ़ा के बोले
दस्तूरे दुनिया को इस तरह निभाते हैं

गर मिलते ना पीर फैहमी गरक आब हो जाते
इस लिए तेरे आगे हम सर को झुकाते हैं

मारुफ तेरा दुश्मन तेरा ही नफ्स था वो
एक बार मार के क्यों सौ बार जिलाते हैं

सामने

कौन रहता है हमेशा सामने
एक मोअम्मे का मोअम्मा सामने

किस का जलवा देख के मूसा गिरे
क्या बला थी आँख के वो सामने

रुख से परदे को हटा परदा नशीं
तेरा आशिक है तड़पता सामने

ये नमाज़े इश्क का दस्तूर है
दिल झुका है सर कटाया सामने

नहनो अकरब से दिया धोका हमें
सामने होके न आया सामने

कहके मजनू कर दिया चाके जिगर
देख मजनू का तमाशा सामने

सर किधर है जाँ किधर दिल किधर
क्या पिलाया क्या पिलाया सामने

शक्ले आदम में हुआ ज़ाहिर कभी
सर मलाइक का झुकाया सामने

रुख से जब परदा हटाया यार ने
पीर फैहमी का था मुखड़ा सामने

लिख के ये मारुफ कलम भी शक हुआ
हुस्ने दो आलम की लैला सामने

गया कोई

जाने कैसी पिला गया कोई
मेरी हस्ती मिटा गया कोई
मआज़ अल्लाह तेरी नज़र का खुमार
मुझको काफिर बना गया कोई
तेरी रफ्तार वल्लाह क्या कहना
जिस्मों जां में समा गया कोई
ख़्वाबे ग़फलत से जब खुली आंखे
पल में ज़िंदा बना गया कोई
थाम कर हम कलेजा रोते रहे
राज़ ऐसा बता गया कोई
डाल कर परदा मीम का किसने
मेरी सूरत में आ गया कोई
भांप बनकर हवास उड़ने लगे
आग ऐसी लगा गया कोई
फूँक कर ख़ाक पे कुंमबिइज़्नी
कितने मुरदे जिला गया कोई
खींचकर हाथ पर लकीरों को
नाम अपना बता गया कोई
रुख़ से परदा उठाकर कर पीर फैहमी
कितने परदे जला गया कोई

मिट नहीं सकते ये निशां मारुफ
सजदा ऐसा करा गया कोई

मैख़ाना पीर का

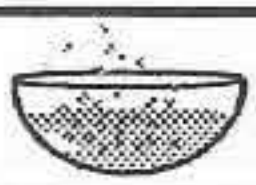

मेरे तारे दम में सौ बार नज़र आते हैं
कलमे के दम से ही सरकार नज़र आते हैं

सर झुका ले किसी पीरे मैख़ाना पर
ऐसे वैसे नहीं सरकार नज़र आते हैं

दीद क्या होती है रिंदो से पूछ ऐ ज़ाहिद
नज़रों में उनके दिलदार नज़र आते हैं

हर लम्हा ईद का उनका ही है ऐ वाएज़
जो इश्के पीर में सरशार नज़र आते हैं

नूर के सांचे में ढलते हैं जो इश्क़ की तरह
ऐसे आशिक़ ग़मों से पार नज़र आते हैं

तेरा ही नाम बक़ा बिल्लाह है पीर फैह़मी
तुझमें ही रब के दीदार नज़र आते हैं

दीवाना हम तुझे कहते थे ऐ मारुफ
दीवाना होके भी होशियार नज़र आते हैं

जलवा नुमा

हर शै में जलवा तेरा हर जा तेरी हुकूमत
फिर भी नज़र न आए कैसी ये तेरी कुदरत
ये कैसी बन्दगी है मैं यहां और तू कहीं है
मैं तुझसे जुदा नहीं हूँ इसे कहते हैं इबादत
हर दम में जुसतुजू है बस तेरी आरजू है
मेरा इश्क कह रहा है तुझसे होगी मेरी वसलत
मैं तुझसे हुआ हूं पैदा तू मुझसे हुआ है ज़ाहिर
वहदत में है कसरत ये बात है हक़ीकत
शमसो कमर में देखा बरगो शजर में देखा
जब ग़ौर से है देखा हर शै में तेरी वहदत
हर फल कह रहा है इसी फल का मैं शजर हूँ
क्या फल है तुझमें लगता तू है कौनसा दरख़्त
पीर फैहमी गुम्बदे बिस्मिल्लाह चमके तेरा हरदम
तेरे साये में जो आये चमके उसकी क़िस्मत
मारुफ होगी रहमत बस कलमे की बदौलत
क्या मिलता नहीं खुदा भी जब कामिल हो मुहब्बत

इक नज़र चाहिये

दीवाने हैं दीवानों को न अपनी ख़बर न दुनिया का डर
नज़र के लिए एक नज़र चाहिये एक नज़र चाहिये

बुलन्दी पे देखो हमारा मकां हमारे ही अंदर ज़मीं आसमां
बिना यार के बंदगी कुछ नहीं जहां यार है रोशनी है वहीं

जो मांगा है मिला है मेरे यार से उस दरबार से
के खुद में भी अपने असर चाहिये

मोहम्मद जब से हमारे हुए खुदा ने कहा हम तुम्हारे हुए
कुर्आं बन गया है हमारी जुबां मोहम्मद जहां हैं खुदा है वहां

मोहम्मद का जो भी तलबगार है उसे प्यार है
मोहम्मद को पाने जिगर चाहिये

हैं अर्शे बरीं पर हमारे निशां हमीं से है आबाद सारा जहां
जो चाहे तो करदे पत्थर को सनम हमीं से है देखो जहां का भरम

हमारे ही मोहताज दोनों जहां मकीं क्या मकां
के खुद में भी आईनागर चाहिये

हमारे ही आगे फरिश्ते झुके हमारे ही आगे हैं सजदा किए
खुदा ने कहा है ख़लीफा हमें खुदा की झलक देख इंसान में

अरे बेख़बर ले कुछ अपनी ख़बर कहां तू किधर
मगर पीर की इक नज़र चाहिये

मेरे पीर फैहमी बड़े मेहरबां तुम्हारे ही सदक़े में पहुंचे यहां
तुम्हीं से खुदा का ठिकाना मिला तुम्हीं से नबी का ख़ज़ाना मिला

आंखों में हो तस्वीर सर में नशा मेरे पीर का
मारुफ तू ही तू का ज़िक्र चाहिये.....

आदमी के पीछे

मेरी ज़िन्दगी पड़ी है तेरी बंदगी के पीछे
मेरी हर खुशी छिपी है तेरी हर खुशी के पीछ

ये मुक़ामे बेखुदी है यहाँ खुद की कब ख़बर है
ये कौन बोलता है मेरी बेखुदी के पीछे

मौत व हयात दोनों है अजीब कशमकश में
मर के भी हूँ मैं ज़िन्दा तेरी आशिक़ी के पीछे

तारे नफस के आगे कई और मंज़िले हैं
आगे निकल चुका हूँ उसी रोशनी के पीछे

असरार कुन्तो कन्ज़न है शक्ल में तेरे
ये कौन छुप गया है इस आदमी के पीछे

आबे हयात उनकी नज़रों से पी रहा हूँ
मुझे ज़िन्दगी मिली है तेरी मैकशी के पीछे

फ़ैहमी पिया के जैसा रहबर मिला न कोई
मैंने खुदी को पाया तेरी रहबरी के पीछे

तफसीर एक "ला" की मुमकिन नहीं है मारुफ
है ख़याले मासिवा अब मेरी ख़ामोशी के पीछे

अश्के बहर

चिराग़े नूरे ईमां उसी में जलवागर होगा
तपीशे इश्क से जिसका जला क़ल्बो जिगर होगा

कलेजा फट के पानी बनके मिस्ले मोम सा पिघला
तेरी चश्मे कमानी का लगा तीरे शरर होगा

शिकारी खुद फंसा है जाल में ही नफ्स के अपने
वही राह पायेगा जो साहबे ग़ौरो फिकर होगा

सिखाया मकतबे इश्क ने हस्ती फना करना
किसे मालूम था ये किस्सा तेरा दर्दे सर होगा

के मक्तल में मिलेगा राज़ तुझको अपने क़ातिल का
हां जिसका दामने तर आलूदे ख़ूने जिगर होगा

तुम्हारा देखने वाला भला ज़िन्दा रहे कैसे
निगाहे नाज़ में पिनहा कोई मीठा ज़हर होगा

मरीज़े इश्क को बक्सी हयाते जावेदा जिसने
वह मेरे पीर फ़ैहमी की निगाहों का असर होगा

ये वह तूफ़ान है रोको तो बढ़ जाता है ऐ मारुफ़
दिले बेताब से निकला हुआ अश्के बहर होगा

मेरी नज़र में हैं

बहरे इरफां अब मेरी नज़र में हैं
हर सांस हमारी मेराजे सफर हैं
जब से देखा है तुझको ऐ जाने जां
तू ही तू का नशा मेरे सर में हैं
बेखुदी का कोई मेरे सबब पूँछे
मेरा अब यार मेरे घर में है
बस गये जाने जिगर दिलों नज़र में
मये इश्क का नशा तेरी नज़र में है
भेदे इलाही सारा आदम नगर में है
सुकूने कल्बो जहां भी तेरे ज़िकर में है
बन गये जो तेरे कलमे के राज़दां
दैरो हरम कहां अब उनकी नज़र में है
इक दम में होता है सत्तर कुर्आं ख़तम
ऐसी भी एक मंज़िल मकामे फिकर में है
पीर फैहमी का जिसने है दर छोड़ा
आदमी वह जा रहा नारे सक़र में है
तेरे दामने रहमत में जब से आये मारुफ
नाम मेरा देखिए शमसो क़मर में है

मज़े तौहीद

अल्लाह कहना छोड़ दे जब ख़ुदी को पायेगा
जब ख़ुदी मिल जायेगी ख़ुद ख़ुदा हो जायेगा

बंद करके आंखो लब को देख जलवा यार का
ज़र्रे ज़र्रे में ख़ुदा जलवा नुमा हो जायेगा

तन है बुत और मन है काबा दोनों को ही तोड़ दे
दे अनल-हक़ की सदायें हक़ ही हक़ हो जायेगा

बंदा है इस्म तेरा और मुसम्मा है ख़ुदा
बंदा ही बंदा रहेगा जब दूई को लायेगा

ज़र्रे ज़र्रे में अनल-हक़ की सदायें गूंजती
चश्में बातिन से जो देखे ख़ुद पता चल जायेगा

बंदे की तस्वीर बनकर कौन तुझमें बोलता
सुन ले गोसे दिल से नादां वरना ठोकर खायेगा

एक दिन सरकार ने हज़रत उमर से यूं कहा
है ख़ुदा हमराह जिनके वह क्यों भला चिल्लायेगा

ज़िक्र कलमे का बताकर ख़ुद ही मज़कूर हो गया
पीर फैहमी दम के अंदर बाहर ख़ुदा कहलायेगा

"ला" के परदे में रखा है ज़ाते हस्ती देख ले
ख़ुद का ही दीदार मारुफ परदा जब उठ जायेगा

आईना | आईना

आपही अपनी हक़ीकत आपही हैं आईना
आपही अपना पता और आपही हैं लापता

दोनो आलम की हक़ीकत आपसे है रवनुमा
आपही नासूत मलकूत आपही हैं जाबजा

मांगने से पहले खुद पे डाल दो गहरी नज़र
आपही हैं मुद्दुई और आपही हैं मुद्दुआ

आपही बादे अजल हैं आपही चश्मे हयात
आपही बाग़े इरम हैं आपही नारे फना

मीम का परदा उठा मेराज में जिस घड़ी
आपही के रुबरु है आपका साया खड़ा

आपही के दम कदम से जगमगा उठा जहां
पीर फैहमी आपही हैं हर तरफ जलवा नुमा

आपमें गर आप पाना आपको मंजूर हो
आप पहले कर फना आप मारुफ हैं बक़ा

हुस्ने अज़ल

ला के मुर्दे में जान इल्लल्लाह
खुदकी करले पहचान इल्लल्लाह

रास्ता खुद बखुद बन जायेगा
देख बनके तूफान इल्लल्लाह

मुरदा सासों को जिंदा कर नादां
तू एक दम का मेहमान इल्लल्लाह

आईना हुस्ने अज़ल का बनाया तुझे
तुझमें महबूबी शान इल्लल्लाह

भूल कर ख़ुद को क्या खुदा पायेगा
छुपा तुझमें रहमान इल्लल्लाह

आते जाते ही दम में इशारा है
पढ़ अपना कुरआन इल्लल्लाह

राज़ कलमे का पीर फहमी से मिला
ले ले उनसे ईमान इल्लल्लाह

ख़ाक में ख़ाक बनकर मिल जायेगा
बात मारुफ की मान इल्लल्लाह

नुक़्ते से नुक्ता

गंजे खफी में क्या है मुर्शिद मुझे बता दे
अर्शे बरीं कहाँ है उस का हमें पता दे

सूरत में कौन छुपा है किसका ये तसव्वुर
सूरत का भेद क्या है मूरत में तू बता दे

कलमें में कुफ्र दो क्यो ये चार शिर्क क्या है
कलमे का राज़ क्या है आदम में तू बता दे

तू किसका है खुलासा तेरा ज़हूर क्या है
अहमद का भेद क्या है अहद में तू बता दे

ये नामे अल्लाह आया है किस मकां से
हुर्फे अलिफ में तू मुझे लामका बता दे

कलमे में नहीं नुक़्ता नुकता ही इब्तिदा है
बे का भेद क्या है नुक़्ते में तू बता दे

पीराने पीर फैहमी आशिक हूँ में मैं तुम्हारा !!
सूरत में मेरी अपनी सूरत को तू दिखा दे !!

सब तुझको ढूंढते हैं तेरा पता नहीं है
मारुफ तू छुपा कहां हमको जगह बता दे

बहाना किसी का

ये जो आदम है बहाना है किसी का
इस में पोशीदा ख़ज़ाना है किसी

दरे साक़ी पे सर मेरा झुकने लगा
उन की मस्त निगाहों से पीने लगा
ये जो साक़ी है फ़साना है किसी का

हू की मस्ती निगाहों में छाने लगी
उनकी सूरत निगाहों में आने लगी
ये जो सूरत है ठिकाना है किसी का

आईने से है कोई सदा दे रहा
तेरे होने का मुझको पता दे रहा
ये जो पुतला है खिलौना है किसी का

कलमा तय्यब वह रुह से पढ़ाने लगे
मेरी सांसों में आके समाने लगे
ये जो कलमा है तराना है किसी का

एक आलम तुम्हारा परस्तार हैं
देखने के लिए कब से बेदार हैं
कितना गहरा ये फसाना है किसी का..

उनकी तिरछी नज़र का हुआ ये असर
दाग़ दिल से दूई का मिटा बेख़तर
पीर फ़ैहमी ये बहाना है किसी का

एक ज़माने से हम भी तो बीमार हैं
सामने होके पोशीदा दिलदार हैं
ये जो मारुफ है दीवाना है किसी का

तिलावते वजूद

नौ दरवाज़े बंदकरके मनका मनका रोल
ख़ुद की मंज़िल पाना है तो मन की आंखें खोल

तन में तेरे छः रतन हैं नहीं जिसका मोल
बीस नुक़्ते पांच तन हैं पच्चीस गुन अनमोल

लाइला की बेल लगा के इल्लल्लाह के राज़ को खोल
नूरे मोहम्मद से करदे उजाला रसूलल्लाह के सुन ले मीठे बोल

दम के सफर में आदम चला है ले के हू का डोल
दम की रस्सी तन का कुआं नहीं है कोई ढोल

हा, हू, हे, की चाबी लेकर पांच दरीचे खोल
तिर कोटी में मोती मिलेगा मोती है अनमोल

कलमे से अपने यार को पाले वक़्त है अनमोल
जवानी जाए निकल रह जायेगी हडडी चमड़ी का झोल

ख़ाक के पुतले पहचान ले खुद को मेहनत होगी वसूल
अब ख़ाक में उड़े हवा तब उड़ेगी हवा में धूल

पीर फैहमी मन में छुपे हैं देख करके तू होल
तेरा तसव्वुर आते ही मेरा बरज़ख़ बना अनमोल

तफसीरे इंसां बयां किया मैं ये राज़ किसी पे न खोल
खुद को तू मारुफ कलमे में ही तोल

कुफ्र

सजदा तेरे कदमो पे अदा कौन करेगा
ये कुफ्र भला मेरे सिवा कौन करेगा

मर कर मेरी मिटटी तेरे कदमो से लिपट जाए
यूँ इश्क मे हसती को फना कौन करेगा

वजूद में बनकर मेरे मौजूद तुम्हीं हो
सांसों से मेरी तुमको जुदा कौन करेगा

होते हैं निगाहों से भी सजदे अरे नादां
पेशानी को अपनी ही सियह कौन करेगा

आसी को तेरे दर के सिवा चारा नही है
मेहशर मे गुनाहों से रिहा कौन करेगा

होते हैं मुकददर से सजदें दरे जानां
मन अरफ की मस्जिद मे अदा कौन करेगा

क्बा नही है दिल मेरा बुतखाना समझले
यूँ पूजा तेरी सूबह व मसा कौन करेगा

फैहमी पिया की चश्म नवाजिश का असर है
हर लम्हा भला मुझ को अता कौन करेगा

मारुफ तेरे सजदें मे भी बुऐ अली है
सर अपना नमाजो मे फिदा कौन करेगा

पीने का शौक

अगर है शौक पीने का मुसल्ले को बिछा कर पी
तू हो जा रु बरु क़िबला कि नज़रों को जमा कर पी

पकड़कर दसते यदुल्लाह उठा ले जामे इल्लल्लाह
सुराही खुद करे सजदा नज़र में रब बसा कर पी

सरे तन से कटा जब सर बना है प्यालए सरमद
उसी प्याले में अल्लाह है तू ज़र्बे हू लगाकर पी

छुपा अहमद मैं अहद है ये जिस्म और वह इस्म है
ये सागर मय अनलहक़ है दूई को तू मिटाकर पी

तेरी रग रग में दौड़ेगा तुझी में आके बोलेगा
तेरा हूँ मैं तेरा हूँ मैं मुझी में आ समा कर पी

जिसे सजदे की फुरसत है वह जाऐ मस्जिदे अक़्सा
यहां फुरसत न फुरक़त है दमा दम दम लगाकर पी

जिसे पूरी हो करने की तमन्ना रब्बे अरनी की
मेरे फ़ैहमी पिया के आगे अपना सर झुकाकर पी

ये कैफो बे खुदी कैसी ये छाया है नशा कैसा
के मारुफ भेद न खुल जाये खुद को तू छुपाकर पी

तुर्फे तमाशा

एक तुर्फे तमाशा हैं साक़ी तेरा मैंख़ाना
पीते ही बन जाये अफ़साने का अफ़साना

जब ख़तम किया कुआं ईंट पे ईंट रखी
दिया खूने जिगर अपना किया तामीरे मैंखाना
पीने को रिन्दाँ सब बांअदबो वजू आए
शक्क़ाहुम रब्बाहुम पढ़ पीते हैं पैमाना
मैंखाना मन्दर है बुत मिस्ल पीरे मुगां
आसां नहीं ज़ाहिद ये ख़ुदा बुत में नज़र आना
क्या पाए खुद को वह क़तरे का नशा देखो
साक़ी की निगाहों में वहदत का है मैंखाना
मन अरफ का प्याला है क़द अरफ़ का शरबत है
आईने में जलवा है और जलवे में आईना
ख़िलवत के अंधेरों में दाना जो फ़ना होकर
ज़िया पाए बक़ा की वह बनता है दुरदाना
पूछेंगे फरिश्ते जब कह दूंगा नशे में हूँ
ये क़ब्र नहीं मुनकिर मयखाना है मयख़ाना
सुनते हैं क़यामत में टूटेंगे सितारे पर
इदराक से आगे हैं पीर फैहमी का काशाना

गंजे ख़फी से छन कर आती है मदीने से
मिले दसते यदुल्लाह से मारुफ ये पैमाना

आयते फुरक़ान

सूरते इंसां में रहमान कह रहा हूँ मैं
कुर्आं का है कुर्आं इंसा इंसान कह रहा हूँ मैं
ज़ातो सिफात का राज़ जिसमें है मख़फी
मैं वह आयते फुर्कान सुबहान कह रहा हूँ मैं
पंजतन पाक का खुलासा है जिसमें
उस तफसीरे सूरत का इरफान कह रहा हूँ मैं
बेचैन होकर जिसे ढूढा दैरो हरम
मेरे ही घर में है वह मेहमान कह रहा हूँ मैं

पढ़ पढ़ के जो हो गये फानी जहाँ में
ऐसे बेनामों निशां की दासतां कह रहा हूँ मैं

पलटकर देखा जब अवराक़े ज़िन्दगानी
हर वरक़ पर है लिखा पशेमान कह रहा हूँ मैं
हो गई खुद की पहचान मन अरफ के पढ़ने से
फक़्द नफ्सहु में मेरी जान कह रहा हूँ मैं
अर्शे बरीं पर मेरे पीर फैहमी का नाम है लिखा
उस नाम के वज़ीफे को ईमान कह रहा हूँ मैं

मुहम्मद के नगर में ही मारुफ खुदा पाया
बन गया है कलमा तेरी पहचान कह रहा हूँ मैं

शौके अरफ़

पहचां को आ गये हैं सूरत बदल बदल के
हर रंग में तुम्हीं हो फितरत बदल बदल के

शौके अरफ में निकले ज़ाते ख़फी से बाहर
खिलवत में लाखों तुम हो ख़ल्क़त बदल बदल के

एक नूर की किरनें लाखों जगह हैं फैली
साया वही है लेकिन क़ामत बदल बदल के

मिट्टी से बनाते हैं मिट्टी में मिलाते हैं
मिट्टी पे क्या क्या गुज़री हालत बदल बदल के

आदम मरा नहीं है अहले नज़र से पूछो
आदम वही है लेकिन सूरत बदल बदल के

लाखों नज़र में तुम हो लाखों नज़र हैं तुममें
तुम थे तुम्हीं हो आये इमामत बदल बदल के

ताजे शफाअत सरपे ख़रक़ा है ज़ेबतन पे
पीर फैहमी छुप गये हैं ख़िलाफत बदल बदल के

बाबे हरम से निकले मुलके अदम में पहुंचे
मारुफ तुम कहां हो तुरबत बदल बदल के

चार सू तेरा जलवा

तेरी नज़रों का धोखा हुआ है चारसू मेरा जलवा अयां है
बोलता हूँ तेरे दम में मैं ही मैंने कब तुझसे परदा किया है

अनलहक़ की मैं ही सदा हूँ चढ़ के सूली पे तुझसे कहा हूँ
है मनसूर मेरा तमाशा तेरा रब तो बन्दा नुमा है

शक्ल इंसां की मैंने बनाया उसमें जलवा फिर अपना दिखाया
तू अभी तक नहीं क्यों समझा बोल कौन तेरा खुदा है

जब से तू बेख़बर हो गया है मेरा जलवा नेहां हो गया है
देख ले खुद में मुझको मेरी जां मुझमें रहकर ही तू पला है

जबसे खुद का पता चल गया है राज़े इन्नी अना मिल गया है
कैसे देखेगा तू मुझको वाएज़ तुझपे परदा दूई का पड़ा है

कुन कहके फयकून हुआ मैं दम में आके आदम हुआ मैं
आदम से हुआ फिर आदम देख कैसी मेरी बक़ा है

पीर फैहमी का भेष बनाकर हर दम में खुद ही समाकर
राज़े कलमा समझ में आया ये बन्दे मैं खुदा है

खुद ही मारुफ मैं हो गया हूँ खुद ही ज़ाहिर मैं हो गया हूँ
जब मुझपे नहीं कोई परदा तू ही परदे में छुपा है

मक़ामे "हू"

मकामे "हू" भी एक ऐसी जगह है
जहाँ मौला न बन्दा दोनों ला पता हैं

दूई को शिर्क कहते आरिफां सब
यहां यकताई भी शिर्के अना है

बना फिंरता है तू कलमे का हाफिज़
नहीं समझा अभी तक क्या सिवा है

निकलकर परदए ला से अल्लाह
वही नुक्ते में आके "हू" हुआ है

उलटकर मीम का परदा जो देखा
शक्ले अहमद में ही अह़द छुपा है

जिसे सब ढूंढते दैरों हरम में
मेरे मुर्शिद में आके छुप गया है

खुदी का आईना खुद रुबरु है
शक्ले मुर्शिद में वह ज़ाहिर हुआ है

कहा मन्सूर ने ये मैं नहीं हूँ
पीर फैहमी ही मुझमें बोलता है

वह न अल्लाह है न बन्दा है मारुफ
फ़क़त "हू" "हू" में वह एक सदा है

नुक्ता बना हूँ मैं

इश्क़ की खातिर ही तेरा बन्दा बना हूँ मैं
दरिया बने हैं आप तो क़तरा बना हूँ मैं

होने का तेरे सब को पता दे रहा हूँ मैं
उम्मुलकुर्आन में तेरा नुक़्ता बना हूँ मैं

वहदत के आईने में कसरत का है ज़हूर
ज़ाहिर तेरे होने को परदा बना हूँ मैं

आदम के दम में कौन सदा दे रहा है सुन
ग़ैबो शहूद दोनों में ला बना हूँ मैं

ज़ाहिर खुदा मुझसे या मैं हूँ खुदा में जम
उक़्दह खुले ये कैसे जब मुअम्मा बना हूँ मैं

आग नहीं हवा नहीं पानी नहीं मिट्टी
नूर हूँ मैं नूर का टुकड़ा बना हूँ मैं

गंजे ख़फी में कौन था जो गुदगुदा रहा
बोला वह मुझ को बे का नुक्ता बना हूँ मैं

आदम बना हव्वा बना पीर फैहमी बन गया
अहले नज़र से पूछो ये क्या क्या बना हूँ मैं

फसम्मो वजहुअल्लाह को मारुफ समझ गये
बेचेहरए यार का चेहरा बना हूँ मैं

फ़ना बक़ा

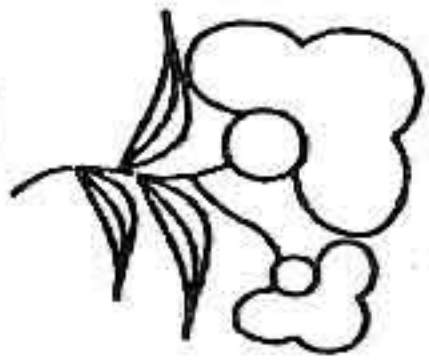

न फना बनके आया न बक़ा बन के आया
जोशे बह़र से तूने एक बुलबुला बनाया

बादे नफस की गरदिश कितने ही बुलबुलों को
कभी खाक में मिलाया कभी आब में मिलाया

सीपी का चाक करके सीनए नूर देखो
क़तरे को शबनम के जो मोती में ढलाया

कूज़े में दफन होके पाए नमूदे तुख़मी
ये फना और बक़ा के क्या दरमियां छुपाया

होना नज़र से गायब ये दलील कब फना है
कहीं डूबना निकलना यही खेल है रचाया

तारे नफ़स का नग़मा हर आन है सुनाया
अपने ही दम के अंदर राह सीधी है दिखाया

रोज़े अज़ल की मस्ती छाई है रग रग में
ख़ुद कहके नहनो अक़रब बेख़ुद हमें बनाया

आते हैं आने वाले जाते हैं जाने वाले
तेरे दर से वह न उठे तेरी दीद जो है पाया

शीशए दिल शिकस्ता नाबूदो बूद यक्सां
न यहाँ सुकून पाया न वहाँ अमान पाया

ये लिबासे मकरो फन में ख़ुद यार है पिनहा
फ़ैहमी पिया की सूरत मेरा यार लेके आया

नहीं मासिवाय तेरे हो फना फिर बक़ा क्या
था इश्क़े अल्लाह मारुफ वही नूर बनके आया

शम्मए नूर

या मोहम्मद मेरे घर में आना होगा
नूर की शमां अब तो जलाना होगा

तुम्हारे ग़म में तड़पते हैं कब से आक़ा
अपने बीमार को कौसर पिलाना होगा

तू ख़याल जिसे क़ालू बला कहते हैं
वादा अज़ल का तुझको निभाना होगा

कौन आया है साँसों में कलमा बनकर
राज़ क्या है ये ज़माने को बताना होगा

पीर फैहमी का दो जहाँ में बोल बाला है
उन ही के सदके से रब को पाना होगा

लाखों की नय्या पार लगाई तुमने
वजदानी को भी पार लगाना होगा

ज़िक्रे नबी

मेरे हर नफस में ज़िक्रे नबी है
कलमए तय्यब में गंजे ख़फी है

बन्दा किसे कहूँ किसको कहूँ मौला
दोनों की दिखती एक ही छवि है

मुर्शिद की निगाहों में फैयकुन का ख़ज़ाना
नहनो अक़रब में मूरत अज़ल से छुपी है

एक ला समझना बड़ा मुश्किल है
मुर्शिद को समझ ले कलमे की कली है

इरफां के समन्दर में रहना है मुझको
खुदको फना कर दूँ मेरी ये खुशी है

मेरा ज़िक्र बनगया या फैहमी इलाही
तेरे दम से निकले दम वह रहमती है

वजदानी मिट जा तू राहे इश्क में
दीवाने कहेंगे ये फ़ैहमी मकीं है

इल्लल्लाह

दम का साथी मिला इल्लल्लाह
तन मन उन पर फिदा है इल्लल्लाह

अर्शे आज़म पे है ख़ुदा का मुक़ाम
कब मैं उससे जुदा इल्लल्लाह

हर एक शै में हुआ है तेरा ज़हूर
मुझमें तेरा पता इल्लल्लाह

कलमए तय्यब से ये राज़ खुला
है मेराज मज़ा इल्लल्लाह

या फैहमी डरुं क्यूँ दुनिया से
तू ही मेरा ख़ुदा इल्लल्लाह

वजदानी मत सोच ख़ुदा के लिए
ख़ुदा तुझ पे फिदा इल्लल्लाह

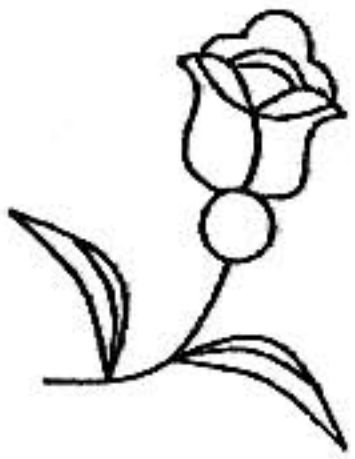

रहनुमा के साथ

गर जुस्तुजू है तेरी रहनुमा के साथ
नज़र आयेगा रुबरु दिलरुबा के साथ

वाक़िफ नहीं मुनकिर मेरी, हस्ती से आज
आठों पहर रहता हूँ अपने खुदा के साथ

ज़ाहिद को अपने सजदे पे नाज़ है बड़ा
रुबरु सनम नहीं तेरी अदा के साथ

शामो सहर करुं मैं ज़िक्र लेके नाम तेरा
अंजामे सफर हो मेरा अपने पिया के साथ

दम को मेरे मिल गई मेराजे ज़िन्दगी
परदा नहीं है अब कोई दिलरुबा के साथ

मेरे पीर फैहमी एक कामिल फ़कीर हैं
हम को मिला दिया है देखो औलिया के साथ

वजदानी नाज़ करता है मुर्शिद के करम पर
अब नहीं है झगड़ा अंता अना के साथ

कुर्आन

मेरे पीर कुर्आं बनाये हुए हैं
वह बहरे इरफां बनाये हुए हैं

मुझे ही मेरी हक़ीक़त सुनाकर
मुझे वह हक़ से मिलाये हुए हैं

इक अलिफ का मिलना इक ला मचलना
अलिफ लाम मीम को मिलाए हुए है

दो मग़रिब दो मशरिक का करके खुलासा
वह आँखों से परदा उठाए हुए हैं

तेरे दर के अदना मुरीद को तूने
वलियों के रंग में रंगाये हुए हैं

पीर फैहमी तुमसा नहीं कोई साक़ी
वह नज़रों से कौसर पिलाए हुए है

ये मैंकशी भी अपनी क्या रंग लाई
नियाज़ को तुमने शाह बनाए हुए हैं

भूल गया

खयाले यार मिला दस्ते मुर्शिद भूल गया
ज़िक्र रुहानी मिला फिक्रे दुनिया भूल गया

दर बदर फिरता रहा सूरते जानां के लिए
मेरी सूरत में मिला शक्ले खुदा भूल गया

ज़र्रे ज़र्रे में मुझे परतवे यार मिला
क़तरा दरिया बना और हवा भूल गया

नूर ही नूर है मरकज़ में और कुछ भी नहीं
इलाहा आईना मेरा शजरे फना भूल गया

नज़र मिलाऊं भला कैसे मुर्शिद तू ही बता
बदल गया है चलन फज़लो दुआ भूल गया

पीर फैहमी ने मुझे आईना अपना है दिया
खेल के खिलाड़ी बने और मैदां भूल गया

सोचते सोचते वजदानी ये कह तो दिया
तू ही है ज़ाते खुदा ग़ैरे खुदा भूल गया

किसको देखना

अब किसको क्या देखना तुझे देखने के बाद
सर खुद बखुद झुक गया तुझे देखने के बाद

मदहोश कर दिया मुझे आँखों से पिला के
नहीं होश में दिल मेरा तुझे देखने के बाद

नक्शा बनाके मैहबूबी पूजा करुंगा मैं
तू बनगया मेरा खुदा तुझे देखने के बाद

लाम अलिफ के दरमियां है तीसरा छुपा
मुझे तीसरा भी मिल गया तुझे देखने के बाद

देरो हरम में यार की सूरत नहीं देखी
पैमाने से ज़ाहिर हुआ तुझे देखने के बाद

खुद वहदतो कसरत है खुद बीज खुद शजर
मेरे आईने में रुनुमा तुझे देखने के बाद

मेरे पीर फैहमी क्या जादू किया तूने
मैं खुद को पा लिया तुझे देखने के बाद

वजदानी इल्म की क्या कमी है तुझे
इल्म में यकता हुआ तुझे देखने के बाद

क्या समझूँ

तेरी हस्ती को मैं क्या समझूं
तेरी मस्ती को मैं क्या समझूं

बिना नुक्ते का कोई इल्म नहीं
ला की कश्ती को मैं क्या समझूं

ओढ़कर परदा मीम अहमद का
तेरी हस्ती को मैं क्या समझूं

सूरए रहमान को जब हम ने पढ़ा
मराजिल बैहरैन को मैं क्या समझूं

आईना मेराज के मानी हुए
ये अल्लाह नबी को मैं क्या समझूं

सरतापा हुस्न है ये मैंखाना
लज़्ज़ते मस्ती को मैं क्या समझूं

कहीं ला है कहीं है इल्लल्लाह
पीर फैहमी की हस्ती को मैं क्या समझूं

है नूरे हबीबी अंदर मेरे
कसरते वजदानी को मैं क्या समझूं

साक़ी

साक़ी ने किस अदा से दीवाना बना डाला
तीरे नज़र का अपनी निशाना बना डाला

एक जाम ज़रा पी ले सारी उमर को जी ले
वहदत के नशे ने मुझे मस्ताना बना डाला

रौशनी ये तेरी रग रग में जल रही है
बन के शम्मा तू आया परवाना बना डाला

राज़ी तुझी को करना ये बन्दगी है मेरी
इस सरको हमने तेरा नज़राना बना डाला

मौतो हयात दोनों एक इम्तेहां है मेरा
दोनों से जुदा करके दुरदाना बना डाला

या फैहमी अल्लाह तुम ने आदिल का जिगर पाया
सारे निशानों का ठिकाना बना डाला

मस्ते नज़र से तुमने वजदानी बना डाला
मुझे क़ादरी चिश्ती का मैंखाना बना डाला

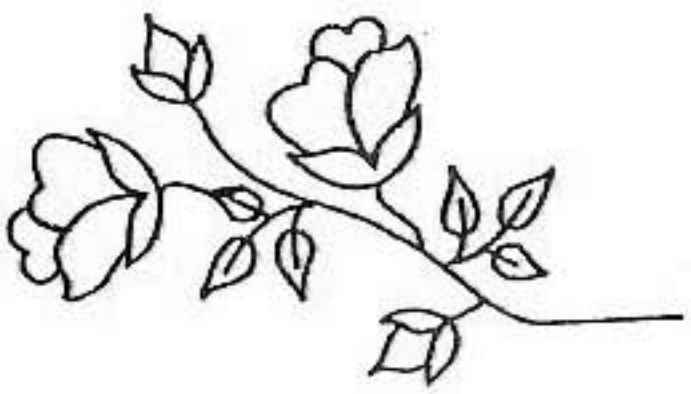

क्या कहूँ

मोहम्मद को खुदा कहूँ तो खुदा को क्या कहूँ
मोहम्मद है बन्दा तो बन्दा को क्या कहूँ

वहदत के आईने में कसरत का है ज़हूर
कसरत का है ज़हूर तो आईने को क्या कहूँ

सर का मकाम समझा नहीं सर झुका तो क्या
शैतां किया जो सजदा वह सजदा को क्या कहूँ

सारा ओलूम नुक्ते में आके हुआ है जम
इल्म हुआ है नुक्ता तो नुक्ते को क्या कहूँ

हो के जुदा आपसे क़तरा हुआ हूँ मैं
दरिया बना है कतरा तो कतरा को क्या कहूँ

पीर फैहमी आपकी निसबत का है तुफैल
पहुंचाया किस मकाम पर उस जा को क्या कहूं

वजदानी एक ला का ये माजरा हुआ
सब कुछ हुआ है ला तो ला को क्या कहूं

मोहम्मद का

पढ़ने लगा है दिल मेरा कलमा मोहम्मद का
इन निगाहों से पी रहा हूँ तहूरा मोहम्मद का

कलमा पढ़ा दिया मुझे रुहे जबां से तू
जलवा दिखा दिया मुझे जलवा मोहम्मद का

कुर्आं कह दिया है कुल्लि शैइन क़दीर
तर्के वजूद देखलो चेहरा मोहम्मद का

दुनिया क्या समझ सके ये पीरी मुरीदी को
यहाँ हर एक बक़ा है दीवाना मोहम्मद का

मेरे पीर फ़ैहमी दो जहां वाले
उन्हीं को बना लिया काबा मोहम्मद का

वजदानी बन गया है गदा तेरे दर का
मेराज मुझे कर अता मोहम्मद का

सलामुन अलैक

सूरते रहमां सलामुन अलैक
सीरते कुआं सलामुन अलैक

नबियों में अफज़ल रसूलों में आला
ऐ शम्मे यज्दां सलामुन अलैक

यासीन ताहा मुज़म्मिल मुदस्सिर
असरारे कुआं सलामुन अलैक

हयातुन नबी से है जारी विलायत
वलियों के सुल्तां सलामुन अलैक

वमा अरसलना कुआं कह रहा है
रहमते हरजां सलामुन अलैक

ख़िज़ा का वह रुख मोड़ जब वह चाहे
बहारे गुलिस्तां सलामुन अलैक

सभी कलमा गो दे रहे हैं गवाही
है तस्दीके ईमां सलामुन अलैक

ये जिन्नो मलाइक हजर भी शजर भी
कहे काबा कुआं सलामुन अलैक

मारुफ कहो बा अदब सर झुकाए
हो लाखों दरुदों सलामुन अलैक

उर्स मुबारक

आला हज़रत ख्वाजा शेख मोहम्मद हुसैन शाह
कादरी अल चिश्ती इफ्तेखारी
अल हसनी वल हुसैनी पीर आदिल
बीजापुरी रहमतुल्लाह अलैह

23 रबीउल-अव्वल सन्दल मुबारक
24 रबीउल-अव्वल जश्ने चिरागां

पता

गुंबद गली, पाशापुर रोड,
बीजापुर शरीफ कर्नाटक

خاکپائے پیر فہمی خواجہ شیخ محمد فاروق شاہ قادری الچشتی افتخاری
معروف پیر عفی عنہ

Khwaja Shaikh Md. Farooque Shah Quadri Al Chishti
Iftekari Maroof Peer